सातवाँ अध्याय

निबन्ध रचना का अभ्यास

हिन्दी-रचना-प्रबोध

प्रथम अध्याय

हिन्दी-भाषा और उसका शब्द-भण्डार

भाषा

भाषा बन्धन है। समाज विशेष को एक सूत्र में बाँधने का साधन है। एक ही भाषा बोलने वाला समाज-विशेष एक जाति है। अपनी ही जाति के व्यक्ति अपनी भाषा द्वारा अपना भाव आपस में एक दूसरे को समझाते हैं और दूसरों का समझते हैं। इस प्रकार अनेक मानव-समाजों की अनेक भाषाएँ हैं। भाषा-भेद से समाज-भेद है, जाति भेद है।

भाषाओं का आदि स्रोत

परन्तु जब इन भिन्न भिन्न भाषाओं का सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं तो प्रत्येक भाषा के मुख्य मुख्य व्यवहारिक शब्दों में एक अजीब समता पाई जाती है। भाषा विज्ञानियों ने बड़े परिश्रम से खोजबीन करके निश्चित किया है कि संसार की सारी भाषाएँ तीन भागों में बाँटी जा सकती हैं :—

१ आर्य भाषाएं — इस भाग में संस्कृत, प्राकृत और उससे निकली हुई हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि प्रचलित आर्य भाषाएँ तथा अङ्गरेज़ी, फ़ारसी, यूनानी, लैटिन आदि हैं।

शामी भाषाएँ—इब्रानी, हबशी और अरबी आदि हैं।

तूरानी-भाषाएँ—मुग़ली, चीनी जापानी, तुर्की और दक्षिण भारतीय भाषाएँ हैं।

आर्य-भाषाओं की शब्द-समता

संस्कृत	मीडी	फ़ारसी	यूनानी	लैटिन	अँगरेज़ी	हिन्दी
पितृ	पतर	पिदर	पाटेर	पेटर	फ़ादर	पिता
दुहितृ	दुग्धर	दुख़्तर	थिगाटेर	•	डाटर	धी
मातृ	मतर	मादर	माटेर	मेटर	मदर	माता
भ्रातृ	ब्रतर	बिरादर	फ्राटेर	फ्रेटर	ब्रदर	भाई
नाम	नाम	नाम	ओनोमा	नामन	नेम	नाम
अस्मि	अह्मि	अस्त	एमी	एम	ऐम	हूँ
ददामि	दधामि	दिहम	डिडोमी	डो	•	देऊँ

इस प्रकार के हज़ारों शब्द हैं जो सिद्ध करते हैं कि इन भाषाओं के क्रम विकास के मूल में एक ऐसी भाषा अवश्य है जिससे इन सब का सामान्य सम्बन्ध है। सम्भव है वैदिक संस्कृत इन सब का उद्गम हो, या उससे भी परे कोई ऐसी भाषा हो जिससे इन सब का जन्म हुआ हो। इस विषय में यह निश्चित अनुमान होता है कि प्रारम्भ में आर्य्य-लोग अपने आदिम स्थान से चारों ओर गये और साथ ही अपनी भाषाओं को ले गये। पश्चिम में ग्रीक, लैटिन अँगरेज़ी आदि भाषाओं की नींव पड़ी। फारस में मीडों द्वारा फारसी, और भारत में संस्कृत का प्रचार हुआ। योरोपीय विद्वानों का मत है कि आदिम स्थान हिन्दकुश के पार मध्य एशिया है और भारतीय अनेक विद्वानों का विचार है कि आदिम स्थान काश्मीर या उसका

उत्तरीय प्रदेश है, यहीं से आर्य लोग चारों ओर गये और अपनी सभ्यता तथा भाषा का प्रचार किया।

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों की भिन्न भिन्न सम्मतियाँ हैं; किन्तु इसमें सब का एक ही मत है कि हिन्दी की मुख्य जननी प्राकृत-भाषाएँ हैं। भेद इस बात में है कि इन परम्परागत प्राकृतों की मुख्य जननी कौनसी भाषा है। कुछ लोगों का विचार है कि वैदिक-भाषा या पुरानी संस्कृत धीरे धीरे प्राकृत के रूप में बदलने लगी, अर्थात् आर्य लोग जब अपने आदिम-स्थान से दक्षिण-पूर्व भारत की ओर बढ़ने लगे तो वहाँ अनार्य लोगों की भाषा का उसमें संमिश्रण हुआ। वही प्राकृत भाषा कहलाई। प्राकृत के भी कई भेद थे। उन्हीं में से एक का संस्कार करके उसे परिमार्जित किया। वही परिमार्जित भाषा संस्कृत हुई। किन्तु प्राकृत निरन्तर बदलती हुई आगे बढ़ती गई, जिससे पाली आदि अन्य प्राकृतों का जन्म हुआ। इन बहुत सी प्राकृतों का भी अपभ्रंश हुआ। इन्हीं अपभ्रंशों से प्राचीन हिन्दी का जन्म हुआ।

अनेक विद्वानों का मत है कि वैदिक संस्कृत से प्रौढ़कालीन साहित्यिक संस्कृत का विकास हुआ। उसी साहित्यिक संस्कृत से प्राकृतों का क्रम-विकास हुआ। कतिपय विद्वान् यह भी कहते हैं कि एक ओर वैदिक भाषा से साहित्यिक संस्कृत दूसरी ओर आर्ष प्राकृत का जन्म हुआ और दोनों का प्रवाह फिर एक हो गया, जिनमे अनेक प्राकृतों की जननी पाली नामक प्राकृत पैदा हुई उससे मागधी शौरसेनी महाराष्ट्री आदि प्राकृतें बनीं शौरसेनी और मागधी के बीच में अर्द्ध मागधी नामक प्राकृत का जन्म हुआ।

इन सब प्राकृतों से अपभ्रंश भाषाएँ बनीं। शौरसेनी मध्य-प्रदेश (ब्रजमण्डल) मागधी बिहार, अर्द्ध-मागधी दोनों के बीच में बोली जाती थी। आवन्ती अवन्तिका (उज्जैन) की भाषा थी। इनसे उत्पन्न हुई अपभ्रंश गुजरात से लेकर बिहार तक व्यापक हो गई। अपभ्रंश के तीन भेद थे नागर, उपनागर और ब्राचड़। सब में मुख्य शौरसेनी प्राकृत की नागर नामक अपभ्रंश भाषा (जो मध्य प्रदेश में बोली जाती थी, सारे उत्तरी भारत की साहित्यिक भाषा होगई। यही शौरसेनी अपभ्रंश हमारी हिन्दी का मूल स्रोत है। कुछ लोग इसे पुरानी हिन्दी भी कहते हैं, जिसकी झलक चन्दबरदायी के रासो में मिलती है।

अनेक लोगों का मत है कि प्राकृत स्वयं मूल भाषा है, उसी से अन्य प्राकृतों का जन्म हुआ; किन्तु यह मत अधिक युक्ति-युक्त नहीं। नीचे लिखी शब्द-तालिकाओं से पता चल जायगा कि हमारी भाषा के अधिकांश शब्द (मुख्य मुख्य व्यावहारिक शब्द) संस्कृत के हैं जो प्राकृत बनते हुए हिन्दी में आये हैं :—

(१)

संस्कृत	पुरानी प्राकृत	पाली	प्राकृत	हिन्दी
अग्निः	अग्गि	अग्गि	अग्गी	आग
बुद्धिः	बुद्धि	बुद्धि	बुद्धी	बुद्धि
षोडश	सोलस	सोलस	सोलह	सोलह
विंशति	वीसा	वीसति, वीसम्	वीसा	बीस
दधि	दहि, दहिम	दधि	दहि दहिम	दही

(२)

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी
हसन्ति	हसइ	हँसे हँसे
करत	करइ	करइ करै करे
सुनत	सुणइ	सुन, सुनै

अपनी भाषा में कर लिया। इसके पीछे पद्य का पूर्ण विकास हुआ। यद्यपि खुसरो ने खड़ी बोली में कुछ रचनाएँ कीं, जायसी ने अवधी में पद्मावत लिखा, तुलसीदास ने बैसवाड़ी में रामायण आदि ग्रन्थ रचे, तथापि वैष्णव कवियों के प्रभाव से ब्रजभाषा का पूर्ण प्राधान्य हो गया। प्रायः उत्तरी भारत में काव्य की यह प्रधान भाषा बन गई। समाज में नयी धारणा, नयी शिक्षा और नये विचारों से नया उत्साह हुआ और कविता भी बोलचाल की भाषा में होने लगी। परन्तु आज भी अवधी, विहारी, पंजाबी, मराठी आदि भाषाओं में कुछ प्रान्तीय कवि रचना करते हैं और करते आये हैं; किन्तु ब्रजभाषा का साम्राज्य एकदम उठ नहीं गया है। विहार, अवध, ब्रजमण्डल, राजपूताने आदि में अब भी अनेक कवियों की कविता का माध्यम ब्रजभाषा है। धीरे धीरे खड़ी बोली के पद्यों का प्रचार बढ़ रहा है। ज़माने की रफ़्तार से आये हुए नये भावों का बोल-चाल की भाषा में व्यक्त करने में अधिक सहूलियत है। यह तो रही पद्य की बात. गद्य का १३ वीं शताब्दी से पहले कोई पता नहीं चलता। मारवाड़ की कुछ सनदों में यहाँ की भाषा के नमूने मिलते हैं। १५ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बाबा गोरखनाथ जी की ब्रजभाषा रचना मिलती है। १७ वीं शताब्दी में गोस्वामी विठ्ठलनाथ, गंगभाट, गो० गोकुलनाथ, महात्मा नाभादास तथा जटमल आदि ने गद्य रचनाएँ की हैं। अधिकांश इन लोगों ने ब्रजभाषा गद्य में ही लिखी। हाँ गंगभाट और जटमल ने ब्रजभाषा गद्य में खड़ी बोली का पुट दिया। १८ वीं सदी में देव, सूरति मिश्र, दास और ललितकिशोरी आदि ने भी ब्रजभाषा की गद्य ही में रचना की। इसके बाद १९ वीं शताब्दी के मध्य में खड़ी बोली का उदय हुआ।

हिन्दी का एक भेद है जो दिल्ली और मेरठ तथा उसके आस-पास बोली जाती है। आगरे की भाषा भी शुद्ध हिन्दी है, जिसमें पहिले पहल लल्लूलाल ने प्रेमसागर लिखा था। आगरे की शुद्ध बोली का ठीक रूप राजा लक्ष्मणसिंह कृत अभिज्ञान शकुन्तला नाटक के गद्य में है। यही दिन प्रति दिन बढ़ती हुई शुद्ध और परिमार्जित हिन्दी है, जिसे खड़ी बोली भी कहते हैं। साहित्यिक और शिक्षा की भाषा तो समस्त उत्तरी भारत की हो गई है, पर मेरठ, दिल्ली, आगरा आदि की ही भाँति अनेक उत्तर भारतीय नगरों की बोलचाल की भाषा बन रही है।

साधारणतया इस सामान्य हिन्दी के तीन भेद हैं :—

१—विशुद्ध हिन्दी—जिसमें अधिकतर संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग होता है।

२—उर्दू—जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का स्थान अरबी फ़ारसी के शब्दों ने ले लिया है। असल में यह हिन्दी का ही एक भेद है, जिसे फ़ारसी अक्षरों में लिखते हैं।

३—हिन्दोस्तानी—जिसमें बोलचाल के साधारण शब्दों का अधिक प्रयोग होता है, यह हिन्दी उर्दू के बीच का रूप है।

हिन्दी का शब्द-भंडार

प्राचीन काल से ही हमारी भाषा का कोई विशेष नाम न होकर उसे केवल भाषा ही कहते हैं। वैदिक और साहित्यिक संस्कृत में भी भाषा ही का प्रयोग है। हिन्दी का भी पुराना नाम भाषा ही है। तुलसीदास जी ने अपने काव्य में भाषा ही शब्द लिखा है :—

"भाषा बद्ध करब मैं सोई"

"का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिये साँच"

"भाषा में हरि चरित बखाने"

एक पुराना श्लोक है:—

संस्कृतं प्राकृतं चैव शूरसेनं च मागधम् ।
पारसीकमपभ्रंशम् भाषाया लक्षणानि षट् ॥

अर्थात् हिन्दी भाषा वह है जिसमें संस्कृत, प्राकृत शौरसेनी, मागधी, अपभ्रंश और फ़ारसी शब्द मिले हों।

कविवर भिखारीदास जी ने कहा है :—

"ब्रजभाषा भाषा रुचिर कहैं सुमति सब कोय ।
मिलै संस्कृत पारस्यौ पै अति सुगम जु होय ।"

अर्थात् हमारी हिन्दी का जो शब्द-समुदाय है उसमें संस्कृत आदि देशीय भाषाओं के साथ फ़ारसी, अरबी आदि विदेशी भाषाओं के शब्द भी मिले हुए हैं।

कविवर भिखारीदास जी ने संस्कृत पारसी दो नाम गिनाये हैं। दासजी का अर्थ लक्षणापूर्ण है। उन्होंने संस्कृत से संस्कृतादि प्राकृत भाषाएं ली हैं। और पारसी से पारसी, अरबी आदि भाषाएं ली हैं। किसी कवि ने कहा है :—

"तुलसी गंग दोऊ भये सुकविन के सरदार ।
जिनकी काव्यन में मिली भाषा विविध प्रकार ॥"

आज कल इन विविध की संख्या और भी बढ़ गई है। इसमें अंगरेज़ी, पोर्तगीज़ आदि के शब्द भी मिल गये हैं। इस प्रकार—

१—संस्कृत के शब्द

२—प्राकृत के शब्द

३—अरबी के शब्द

४—फ़ारसी के शब्द

५—अँगरेज़ी आदि यूरोपियन भाषाओं के शब्द

६—प्रान्तीय भाषाओं के शब्द

७—देशज शब्द (जो न संस्कृत से उत्पन्न हुए न किसी दूसरी भाषाओं से) जिसमें अनुकरण वाचक शब्द भी सम्मिलित हैं।

संस्कृतादि से उसी रूप में आने वाले शब्द तत्सम कहाते हैं, जैसे—हृदय, अग्नि, आकाश।

संस्कृत से विकृत होते हुए प्राकृत के शब्द तद्भव कहाते हैं, जैसे—काम, (कार्य), हाथ, (हस्त), घर, (गृह)।

अरबी-फारसी के शब्द भी तत्सम और तद्भव दोनों रूप में आते हैं; जैसे :—

तत्सम—ग़ाफ़िल, मज़दूर, बाज़ार, फ़िहरिस्त, नक़ल, दारोग़ा।

तद्भव—मजदूर, बजार, फैरिस्त, नकल, दरोगा आदि।

अँगरेज़ी आदि के भी दोनों प्रकार के शब्द काम में आते हैं।

तत्सम—फ़िटन, रेल, होल्डर, टेबुल, चेयर।

तद्भव—कलक्टर, लालटैन, अंजन, लंकलाट।

प्रान्तीय भाषाओं के शब्दः—

मराठी—लागू, चालू बाड़ा आदि।

बङ्गला—उपन्यास, अनुसधान, अध्यवसाय, अनूदित गल्प, अनुशीलन आदि।

अनुकरण वाचक—जो किसी पक्षी की स्वाभाविक क्रिया, प्रकृति की किसी स्वाभाविक हरकत अथवा किसी पदार्थ की ध्वनि का अनुकरण हो; जैसे—फरफर, खटाखट, चटपट, काँयकाँय आदि ।

अभ्यास

१—भाषा और समाज में क्या सम्बन्ध है ?
२—कैसे सिद्ध होता है कि प्रारंभ में भाषाओं के बहुत थोड़े भेद थे ?
३—हिन्दी-भाषाएँ कौन कौन हैं ? कौन कहाँ बोली जाती है ?
४—हिन्दी की उत्पत्ति और विकास का प्रकार लिखो ?
५—हिन्दी भाषा में किन २ भाषाओं के शब्द मिले हैं ?
६—१० संस्कृत के तत्सम और १० तद्भव शब्द लिखो ?
७—कुछ अरबी फारसी तथा अँगरेज़ी के तद्भव शब्दों के नाम गिनाओ ?
८—देशज शब्द क्यों कहाते हैं ? कुछ देशज शब्दों की नामावली दिखाओ ?

यौगिक शब्द

हिन्दी भाषा में मुख्यतः शब्द तीन प्रकार से बनाये जाते हैं, शब्दों के पूर्व उपसर्ग के योग से शब्दों के पीछे प्रत्यय लगाकर और समास की रीति से। इनके सिवाय एक ही शब्द को दुहराने, दो समानार्थक या विपरीतार्थक शब्दों के प्रयोग में तथा किसी पदार्थ या प्राणी की ध्वनि या बोली के अनुकरण में भी नये शब्द बनाये जाते हैं. जिन्हें क्रम से पुनरुक्त अथवा अनुकरण वाचक शब्द कहते हैं।

उपसर्ग के योग में :—

कुछ अव्यय धातु के साथ मिल कर खास खास अर्थ प्रकाशित करते हैं इस प्रकार के अव्ययों को 'उपसर्ग'

कहते हैं। उपसर्ग धातु के साथ मिलकर या तो किसी धातु के अर्थ को उलटा कर देते हैं, अथवा उसमें विशेषता पैदा कर देते हैं; जैसे आदान और आगमन में 'आ' उपसर्ग 'दा' और 'गम्' धातु के विपरीत अर्थ प्रकाशित करता है। परिदर्शन और परिभ्रमण में उपसर्ग द्वारा दर्शन और भ्रमण का अर्थ ही द्योतित होता है। 'प्रदान' में 'प्र' उपसर्ग से किसी प्रकार का हेर फेर नहीं होता।

पद	उपसर्ग	धातु	प्रत्यय	अर्थ
आदान	आ	दा	अन	लेना
प्रदान	प्र	दा	अन	देना
निदान	नि	दा	अन	हेतु
उपादान	उप	दा	अन	कारण

उपसर्ग	मूल	पद	अर्थ
आ	कार	आकार	सूरत
प्र	कार	प्रकार	भाँति
वि	कार	विकार	बुराई
उप	कार	उपकार	भलाई
प्रति	कार	प्रतिकार	रोक,बदला
सम्	कार	संस्कार	शोधन

'कृ' धातु में "अ" प्रत्यय के योग से कार पद बना है।

इसी भाँति :—

'भू' धातु से—संभव, विभव पराभव अनुभव, उद्भव प्रभव, प्रभाव।

'हृ' धातु से—आहार प्रहार, संहार, विहार, उपहार, व्यवहार।

'पद' धातु से—सम्पदा, आपदा, विपदा, सम्पत्ति, निष्पत्ति, उत्पत्ति, आपत्ति।

'स्था' धातु से—स्थान, संस्थान, अवस्थान, अनुष्ठान, संस्था, अवस्था, व्यवस्था।

'दिश्' धातु से—आदेश, प्रदेश, विदेश, उपदेश।

'कृ' धातु से—अधिकार, उपकार, प्रतिकार, विकार, आकार, संस्कार, दुष्कर।

'चर' धातु से—उपचार, विचार, आचार।

'क्रम' धातु से—अतिक्रम, विक्रम, आक्रमण, उपक्रम, पराक्रम।

'ज्ञा' धातु से—आज्ञा, संज्ञा, प्रज्ञा, उपज्ञा।

कुछ अव्यय और विशेषण भी उपसर्ग का काम देते हैं।

अ—अनाथ, अज्ञान, अनीति, अनेक।
अधस्—अधःपतन, अधोभाग।
पुनः—पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुक्ति।
स—सजीवन, सफल, सहित, सगोत्र।
चिर—चिरकाल, चिरजीवि।
सत्—सज्जन, सत्कर्म, सद्गुरु आदि।

हिन्दी उपसर्ग

अ—अजान, अचेत, अलग, अबेर।
अध—अधकचा, अधपका, अधेड़
औ—औगुण, औघड़
नि—निकम्मा, निठल्ल, निडर।
[illegible]

उर्दू उपसर्ग

खु—खुशदिल, खुशबू।
ग़ै—ग़ैरमुमकिन, ग़ैरहाज़िर।
ना—नाराज़, नापसन्द, नालायक़।
बद—बदनाम, बदमाश।
बे—बेचारा, बेईमान, बेतरह।
सर—सरकार, सरदार, सरताज।
हर—हररोज़, हरसाल, हरघड़ी।

प्रत्यय के योग में:—

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं, कृदन्त और तद्धित।
कृदन्त—क्रिया या धातु के अन्त में प्रत्यय लगा कर जो शब्द बनते हैं।

संस्कृत कृदन्त से बने विशेष्य
'अक' प्रत्यय के योग में:—

कृ धातु से कारक, नी से नायक, पी से पायक, पच से पाचक, गै से गायक, दा से दायक, जन से जनक आदि कर्तृवाचक शब्द बनते हैं।

'अन' (अनट्) प्रत्यय के योग में —

नी से नयन, लोच से लोचन, चर से चरण, कृ से करण, साध से साधन, स्था से स्थान, शी से शयन, भू से भवन, पच् से पाक, त्यग् से त्याग, आदि पद बनते हैं।

भाववाचक धातुओं के आगे 'अन' प्रत्यय के योग में:—

गम् से गमन, भुज से भोजन, ज्ञा से ज्ञान, मा से मान, दा से दान, शी से शयन, पत् से पतन, कृ से करण, तप से तपन, जल से जलन आदि बनते हैं।

धातु के आगे 'ति' प्रत्यय के योग में :—

भाववाचक शब्द—शुध् से शुद्धि, गम् से गति, मन् से मति, शम् से शान्ति, पुष् से पुष्टि, दृश् से दृष्टि, ग्लै से ग्लानि, ख्या से ख्याति, मा से मिति, स्था से स्थिति, नी से नीति, प्री से प्रीति भी से भीति आदि शब्द बनते हैं।

संस्कृत कृदन्त से बने विशेषण।

अपहरण (हृ) से अपहृत, उपकार (कृ) से उपकृत, संतोष (तुष्) संतुष्ट, भय (भी) से भीत।

धातु	प्रत्यय	विशेषण	अर्थ
कृ	तव्य	कर्तव्य	करने योग्य।
दा	तव्य	दातव्य	देने योग्य।
गम्	तव्य	गन्तव्य	जाने योग्य।
पृच्छ्	नीय	पृच्छनीय	पूछने योग्य।
जि	त (क्त)	जित	जीता हुआ।
मृ	त (क्त	मृत	मरा हुआ।
पू	त (क्त)	पूत	शुद्ध हुआ।
पत्	इत (क्त)	पतित	गिरा हुआ।
वि+ज्वल	इत क्त)	विज्वलित	विज्वलित किया हुआ।
मूर्छा	इत (क्त)	मूर्छित	मूर्छा प्राप्त।
रुज्	क्त)	रुग्ण	रोग ग्रसित।
गम्	णिन्	गामी	चलने वाला।
सह	इष्णु	सहिष्णु	सहने वाला।

हिन्दी कृदन्त से बने विशेष्य

भाव वाचक शब्द :—

मारना से मार, दौड़ना से दौड़, सोचना विचारना से सोच विचार, उठना से उठान, उतरना से उतार, चढ़ना से चढ़ाव, हँसना से हँसी, बनना से बनाव, निकलना से निकास, पीसना से पिसान, रटना से रट, चिल्लाना से चिल्लाहट, दकना से दकावट, मिलना से मिलावट, पढ़ना से याद, चढ़ना से चढ़ाई, लड़ना से लड़ई, लिखना से लिखाई।

कर्म वाचक :—

ओढ़ना से ओढ़नी, सूँघना से सुँघनी।

करण वाचक :—

कतरना से कतरनी, छानने से छननी, ढकना से ढक्कन, बुहारना से बुहारी, सुमिरना से सुमिरनी, झूलना से झूला, ठेलना से ठेला, घेरना से घेरा आदि।

कर्तृ वाचक में

जड़ना से जड़िया, धुनना से धुनिया।

हिन्दी कृदन्त से बने विशेषण

टिकना से टिकाऊ, बिकना से बिकाऊ, सुहाना से सुहावना, लुभाना से लुभावना, उड़ना से उड़ाकू हँसना से हँसने वाला, ढालना से ढलवाँ, जड़ना से जड़ाऊ, चलना से चालू, पीना से पीने योग्य, झगड़ना से झगड़ालू, समझना से समझदार मिलना से मिलनसार, होना से होनहार लड़ना से लड़ाकू, गाना से गवैया, खेलना से खिलाड़ी, माँगना से मँगैनू, तैरना से तैराक, अड़ना से अड़ियल, सड़ना से सड़ियल।

संस्कृत तद्धित से बने विशेष्य

मूल अर्थ में :—

बन्धु से बांधव, चोर से चौर, चण्डाल से चाण्डाल, कुतूहल से कौतूहल, मरुत से मारुत, सेना से सैन्य, त्रिलोक से त्रैलोक्य, समान से सामान्य।

सन्तान के अर्थ में :—

दशरथ से दाशरथि, सुमित्रा से सौमित्र, वसुदेव से वासुदेव, अदिति से आदित्य, पृथा से पार्थ, मनु से मानव, गंगा से गांगेय, दिति से दैत्य।

दूसरे अर्थों में :—

तर्क से तार्किक, मर्म से मार्मिक, न्याय से नैयायिक, व्याकरण से वैयाकरण।

शिव से शैव, विष्णु से वैष्णव, शक्ति से शाक्त, गणपति से गाणपत्य।

हिन्दी तद्धित से बने विशेष्य

लड़का से लड़काई, लड़कपन, बाप से बपौती, बूढ़ा से बुढ़ापा, गाय से गैया, खाट से खटिया, मक्खन से मक्खनियाँ, सराफ़ से सराफ़ा, बज़ाज से बज़ाजा, भला से भलाई, बुरा से बुराई, ऊँचा से ऊँचाई, लम्बा से लम्बाई, चूरी से चुरिहारा, सोना से सुनार, मीठा से मिठास, कण्ठ से कण्ठी, पट्टा से पट्टाल, कडुआ से कडुआहट, तेल से तेली, साँप से सँपेरा, काँसा से कसेरा, पहुँचे से पहुँची, काठ से कठौता, सेवा से सेवक।

हिन्दी तद्धित से बने विशेषण

भूख से भूखा, प्यास से प्यासा, घर से घरेलू, अरब से अरबी, बनारस से बनारसी, भाँग से भँगेड़ी, वन से [illegible]

गेरू से गेरुआ मामा से ममेरा, धूम से धुमेला, दूध से दुधैला, दया से दयावन्त, धन से धनवन्त, मति से मतिमान, ठण्ड से ठण्डा।

पुनरुक्त पद

एक ही अर्थ वाले पद :—

आमोद-प्रमोद, हरा-भरा, हृष्ट-पुष्ट, देख-रेख, श्रद्धाभक्ति, चहलपहल, दानदक्षिणा, दौड़धूप, बोलचाल, घरद्वार, अनुनय-विनय, जीवजन्तु, हाटबाज़ार, रीतिनीति, बन्धुबांधव, चोर-डाकू, आहारविहार, सेवासुश्रूषा।

विपरीत अर्थ वाले पद :—

प्रायः विपरीत अर्थ वाले दो पद साथ साथ आते हैं :— घट-बढ़ नीच-ऊँच, आगा पीछा, लैन-दैन, सुख-दुख, पाप-पुण्य, नया-पुराना, स्वर्ग-नर्क, उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, गुण-दोष, लाभ-हानि, स्थावर-जंगम, छोटे-बड़े, जन्म-मृत्यु, घटती-बढ़ती, जमा-खर्च, आना-जाना, आय-व्यय, आग-पानी।

आविर्भाव-तिरोभाव, धनी-दरिद्र, उत्कृष्ट-अपकृष्ट, जागृत-सुप्त, उत्थान-पतन, घात-प्रतिघात, सुलभ-दुर्लभ, स्वर्ग-नरक, चल-अचल, निन्दा-स्तुति, जलचर-थलचर, पुण्य-पाप, सुख दुख, पण्डित-मूर्ख, उदय-अस्त, निद्रा-जागृति, शुभाशुभ, क्रोध-क्षमा, संयोग-वियोग, लाभ-हानि, हर्ष-विषाद, वादी-प्रतिवादी, साधु-असाधु, बाहर-भीतर, धनी-निर्धन, उदय-अस्त, जस-अपजस, सार-असार, आकाश-पाताल, भूचर-खेचर, जय-पराजय, संधि-विग्रह, संपद्-विपद् आय-व्यय, ह्रस्व-दीर्घ, जीवन-मरण।

समास द्वारा बने हुए पद

संस्कृत समस्तपद ।

(१) द्वन्द्व समास—माता और पिता, माता पिता ।
कंद और मूल और फल, कंद-मूल-फल ।
मन और क्रम और वचन, मन-क्रम-वचन ।
अहन् और निशा, अहर्निश । अहन् और रात्रि, अहोरात्रि ।

(२) तत्पुरुष (कर्म कारक में) शरण को आगत, शरणागत ।
करण—शोक से आकुल, शोकाकुल ।
मोह से अंध, मोहांध ।
(अपादान में)—पाप से मुक्त, पापमुक्त ।
आदि से अन्त, आद्यन्त ।
(सम्बन्ध में)—गंगा का जल, गंगाजल ।
गुरु का उपदेश, गुरूपदेश ।
(अधिकरण में —रथ में आरूढ़, रथारूढ़ ।
सेवा में निरत, सेवानिरत ।

कर्मधारय परम है जो ईश्वर, परमेश्वर ।
परम है जो सुन्दर, परमसुन्दर ।
दुष्ट है जो मति, दुष्टमति ।
अल्प (अल्पा) है जो बुद्धि, अल्पबुद्धि ।
साध्वी है जो कामना, साधुकामना ।
कम्पित है जो लता, कम्पितलता ।

बहुव्रीहि—अल्प है बुद्धि जिसकी, अल्पबुद्धि ।
स्वच्छ है तोय जिसका, स्वच्छतोया ।
नष्ट है मति जिसकी, नष्टमति ।

जानने के अभाव में	अनजान	(अव्ययीभाव)
पेट भरने के भाव में	भरपेट	,,
ठीक बीच के भाव में	बीचोंबीच	,,
नीली है जो गाय	नीलगाय	(कर्मधारय)
दही की हाँड़ी	दहेंड़ी	(तत्पुरुष)
दई (दैव) से मारा	दईमारा	(तत्पुरुष)
वन का मानुष	वनमानुष	(तत्पुरुष)
राजाओं के पूत	राजपूत	(तत्पुरुष)
मीठा है बोल जिसका	मिठबोला	(बहुव्रीहि)

अनुकरण वाचक

खट् खट् होने से	खटाखट	खड़ाऊँ पहन कर खटाखट करते हुए चले।
पड़ पड़ होने से	पड़पड़ाहट	थोड़ी ही देर में बादल हो आया. पड़पड़ाहट मच गई।
सन सन होने से	सनसनाहट	कुनैन खाने से कानों में सनसनाहट मच गई।
चहचहाने से	चहचहाहट	चिड़ियों का चहचहाना कैसा मनोहर है।
कुहू कुहू		कोयल कुहू कुहू करती है।
काँव काँव		कौआ की काँव काँव किसे भाती है
भूँ भूँ		भूँ भूँ करते हुए भौंरे उड़ रहे थे।
फुर फुर		चिड़िया फुर फुर करती हुई उड़ गई

शाक्त के बजाय 'शाक्त' के उपासक ही लिखें तो हानि नहीं परन्तु 'शाक्तर' इत्यादि लिखना ठीक नहीं। वैधव्य की जगह विधवा या वैधव्य न लिखकर विधवापन लिखना बुरा न रहेगा। पारिश्रमिक ठीक न हो सके तो परिश्रम का फल ही लिखना काफ़ी होगा। सुजन का भाव सौजन्य है। कोई ता प्रत्यय का अलग बोझ भी सुजन की पीठ पर लाद कर अपनी योग्यता का परिचय देते हैं। सौजन्यता की जगह सुजनता अधिक ठीक रहेगा। इसके सिवाय, श,स,ष, के प्रयोगों तथा व और ब के प्रयोगों में बड़ी भूल रहती है। नीचे की तालिका में साधारण भूलों का दिग्दर्शन कराते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शूद्राणी	शूद्रा	निर्दोषी	निर्दोष
निर्धनी	निर्धन	राजागण	राजगण
अहोरात्रि	अहोरात्र	दुरावस्था	दुरवस्था
निरर्थ	निरर्थक	अधीनस्थ	अधीन
महाराजा	महाराज	एकत्रित	एकत्र
वर्षारात्रि	वर्षारात्र	सन्मान	सम्मान
विश्वमित्र	विश्वामित्र	सलज्जित	सलज्ज व लज्जित
उपरोक्त	उपर्युक्त	वाढ़	बाढ़
दरिद्रता	दारिद्र्य	वाण	बाण
सावधानपूर्वक	सावधान	बानर	वानर
पार्वतीय	पर्वतीय	बामदेव	वामदेव
अस्मह[illegible]द	असर	बायु	वायु
ज्ञानमान	ज्ञानवान	बामन	वामन
कृतघ्नी	कृतघ्न	बिघ्न	विघ्न

नोट—जहाँ पर ठीक तत्सम शब्दों का व्यवहार हो, वहाँ 'ष', 'ख' और 'श', 'ष', 'स' के प्रयोगों का ध्यान रखना चाहिये। पुराने पद्यों में तो अधिकांश 'ष' की जगह 'ख' और 'श' की जगह 'स' का प्रयोग है। उच्चारण की सुविधा के विचार से ही उनका प्रयोग पड़ा है। "दलमुख मैं न पसीठी आवे" सीटी युक्त 'श' के बजाय दन्त्य 'स' का उच्चारण अति सहज है।

साधारण प्रयोग

अकार, इकार और यकार

एक ही उच्चारण के शब्द प्रायः कई प्रकार से लिखते हैं, जैसे:—लिये लिए, आई आयी, गये गए, सोए सोये, खाये गये, खाए गये, खाये गए, खाए गए, खाओ खावो, गाओ गावो, भाये भाए, किये किए आदि।

ऐसे अनेक प्रयोग जिसे मनुष्य कई कई प्रकार से लिखते हैं। हिन्दी इतिहास के रचयिता प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री मिश्रबंधुओं की सम्मति तो यह है कि अभी हिन्दी का विकास-काल है इसमें जो जिस प्रकार से लिखे, लिखने दीजिये, ठीक है।

कुछ लोगों की राय है कि जब स्वर से ही काम निकल जाय तब व्यञ्जन की आवश्यकता ही नहीं है।

अनेक लोगों का मत है कि जब गया होता है तो गये ज़रूर होना चाहिये। खाया खाये, पाया पाये, पिया पिये परन्तु स्थायी किसी गयी में किसी नहीं होता। मेरी समझ में

हुआ	हुए	हुई
गया	गये	गई
खाया	खाये	खाई

इन प्रयोगों में अधिकांश तद्भव हैं, तत्सम् उनके साथ कोष्ठक में दिये हुए हैं। कचहरी के मुंशी, वकील, मकतबों के आस पास का वायु मण्डल, अरबी फ़ारसी की शिक्षा पाये हुए नागरिक, मुसलमानी शासन से जिनका अधिक सम्बन्ध रह चुका है ऐसे ख़ास घराने, लखनऊ, आगरा, देहली आदि शहरों के विशेष निवासी तत्सम् शब्द अधिक बोलते हैं। नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने तो अधिकांश फ़ारसी और अरबी के शब्दों के नीचे से बिन्दी भी उड़ादी है। जरूरत, फरियाद, फतह, फर्द, फरमाइश, फरमान आदि बिना बिंदी के लिखे पढ़े जाने लगे हैं। सच बात तो यह है कि अरबी फ़ारसी के साहित्यक और उनसे सम्पर्क रखने वाले लोग भले ही तत्सम् प्रयोगों के आदी हों परन्तु साधारण हिन्दी भाषा भाषी जनता प्रकृति नियमानुसार इसके लिये वाध्य नहीं है।

अङ्गरेज़ी आदि भाषाओं के शब्द

यही हाल यूरोपियन भाषा के प्रयोगों का है। पहिले पहल जब पुर्तगाल और फ्रांस वालों से काम पड़ा तो उनकी भाषा के अपभ्रंश शब्द हिन्दी में आने लगे। अँगरेज़ी एँजिन का रूप हिंदी में अञ्जन, लमन का लम्नन, लॉगक्लाथ का लंकलाठ, लैनटर्न का लालटेन, फ्लैनिल का फलालैन, टिकिट का टिकट, माइल का मील, बौटल का बोतल टरपेन्टाइल का तारपीन, थियेटर का थेटर, वैस्कोट का वास्कट, बैंक का बंक, बॉक्स का बक्स, डॉक्टर का डाक्टर, गोडाउन का गोदाम आदि तद्भव और नोटिस, रेल, स्कूल, बटन बेंच कलक्टर, इंच, हारमोनियम, स्टेशन, टाइम, इन्सपेक्टर फार्म इञ्जीनियर,

पर्याय या प्रतिशब्द

एक शब्द के परिवर्तन में अन्य शब्द का प्रयोग करना 'प्रतिशब्द' कहलाता है। 'प्रतिशब्द' द्वारा किसी शब्द का अर्थ करना बड़ा सुगम है, किन्तु जिस शब्द का पर्याय लिखना हो उससे सरल शब्द लिखना चाहिये; जैसे :—

अश्व के लिये घोड़ा और गज के लिये हाथी।

धातु के साथ प्रत्यय के योग में, अथवा रूढ़ि-रूप धातु के अर्थ में तथा समासों में आये हुए शब्दों में जो अर्थ होता है, उसे व्युत्पत्त्यर्थ कहते हैं। यौगिक और योगरूढ़ पदों के व्युत्पत्त्यर्थ का बहुत शीघ्र बोध होता है; जैसे :—

मेघ के समान नाद है जिसका सो मेघनाद; लम्बी है हनु (ठोड़ी) जिसकी सो हनुमान; शर का आसन है जिस पर, सो शरासन; नहीं रोग है जिसे, सो निरोग; तरंग उठती हैं जिसमें, सो तरंगिनी (नदी); शिव है इष्टदेव जिसके, सो शैव।

लक्षणा

जहाँ शब्दों का सीधा सीधा अर्थ न लगाकर प्रयोजन की रूढ़ि के कारण कोई निकट सम्बन्ध रखने वाला दूसरा अर्थ लिया जाय वहाँ 'लक्षणा' होती है। लक्षणा के द्वारा जो अर्थ जाना जाय वह 'लक्ष्यार्थ' कहलाता है; जैसे :—

गंगावासी पद में 'गंगा' पद का वाच्यार्थ जल-प्रवाह है, उसमें वास करना असम्भव है, इसलिये गंगा-तीर-वासी अर्थ होगा। जिस लक्षणा द्वारा वाच्यार्थ का विपरीत अर्थ समझा जाय उसे विपरीत लक्षणा कहेंगे जैसे:—किसी [illegible] काम [illegible] का देख कर कहा जाय कि 'कितना [illegible] आदमी है'

व्यञ्जना

वाच्यार्थ या लक्ष्यार्थ को छोड़ कर जिसके द्वारा एक और अर्थ जाना जाय उसे 'व्यञ्जना' कहते हैं। व्यञ्जना द्वारा जो अर्थ घटित होता है वह 'व्यंग्यार्थ' कहलाता है।

गेंद खेलने में किसी खिलाड़ी ने कहा 'अब तो अँधेरा हो गया' इसका अर्थ यह है कि खेल बन्द कर देना चाहिये।

सुनने वालों की पृथक्ता के कारण एक वाक्य के कई व्यंग्यार्थ हो सकते हैं।

कभी एक ही शब्द के अनेक वाच्यार्थ होते हैं-

पत्र—पत्ता, चिट्ठी।
पृष्ठ—पीठ, सफ़ा।
पय—पानी, दूध, अमृत।
तात—माता, पिता, भाई, मित्र, कोई भी आत्मीय।
गुण—रस्सी, हुनर, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, ज्ञान, विनय, सत्य, लाभ (गुण नहीं किया उपा, महत्त्व।
रस—कडुआ, खट्टा आदि छै रस, करुणा आदि ९ रस, पारा, स्वर्ण आदि भस्म।
छन्द—इच्छा, पद्य।
बेला—कटोरा, एक बाजा, समय, फूल विशेष।
कर—हाथ, किरण, सूँड।
अक्षर—ब्रह्म, तपस्या, मोक्ष, नित्य, ककारादि वर्ण।
अङ्क—चिह्न, गोद, रेखा, संख्यासूचक चिह्न, नाटक का परिच्छेद।
अचल—गति हीन दृढ़, स्थिर, अविचलित, क्रियाहीन पर्वत, अचला पृथिवी)।

अच्युत—कृष्ण, विष्णु, स्थिर, अविनाशी।

अज—ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, राजा दशरथ के पिता, बकरी, भेड़ा।

अनन्त—विष्णु, सर्पों का राजा, ब्रह्म, आकाश, अविनाशी, अंतहीन।

अन्तर—अवकाश, मध्य, छिद्र, अवसर, अवधि, अन्तर्धान, व्यवधान, तारतम्य।

अमर—देवता, पारा, वटवृक्ष।

अमृत—जल, पारा, दूध, रस, स्वर्ग, अमृता (गिलोय)।

अरुण—सूर्य्य, सूर्य का सारथी, रक्तवर्ण।

अर्क—आक का पौधा, सूर्य, ताम्र, इन्द्र, विष्णु, ज्येष्ठ भ्राता।

आत्मा—स्वरूप, ब्रह्म, परमात्मा, सूर्य, अग्नि।

उदय—उदयाचल पहाड़, उन्नति, उद्गम, उत्थान, फलसिद्ध।

धर्म—पुण्य स्वभाव रीति, शास्त्र के अनुसार आचार-विचार।

अर्थ—अभिप्राय, प्रयोजन, धन।

हरि—विष्णु, वानर, सर्प, किरण, सिंह।

एक से वाच्यार्थों का सूक्ष्म भेद

बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनका साधारण रीति से एकसा अर्थ प्रतीत होता है परन्तु उनके अर्थों में वास्तव में अन्तर होता है जैसे:—[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अलौकिक और अस्वाभाविक—

अलौकिक—लोक और समाज में पहिले न देखा गया हो।

अस्वाभाविक—जो सृष्टि-नियम के विरुद्ध हो।

अलौकिक अस्वाभाविक हो सकता है किन्तु अस्वाभाविक अलौकिक नहीं हो सकता।

भ्रम और प्रमाद—

भ्रम—असावधानी से जहाँ भ्रान्ति हो।

प्रमाद—मूर्खता और मत्तता से जहाँ भ्रान्ति हो।

अज्ञान और अनभिज्ञ—

अज्ञान—जिसमें स्वाभाविक बुद्धि ही न हो।

अनभिज्ञ—जिसे समझने का अवसर ही न प्राप्त हुआ हो।

द्वेष और ईर्षा—

द्वेष—किसी कारण से एक मनुष्य दूसरे से घृणा करने लगे।

ईर्षा—निष्कारण दूसरे की बढ़ती पर जलन। धनी से निर्धन और ज्ञानी से मूर्ख ईर्षा करता है।

श्रम, आयास, परिश्रम—

शरीर के अङ्गों (हाथ पाँव आदि) से काम करने को श्रम कहते हैं। मन की शक्ति लगाने में आयास, श्रम की विशेषता परिश्रम है। श्रम से शांति और परिश्रम से क्लांति होती है।

उत्साह, उद्योग, उद्यम, प्रयास, चेष्टा—

कार्य करने की उमंग होना उत्साह है। काम में लग पड़ने का नाम उद्योग है। उद्योग की स्थिरता उद्यम है। सफलता के समीप उद्यम का नाम प्रयास है। किसी कार्य का बाहिरी प्रयत्न चेष्टा है।

अभ्यास।

१—तत्सम और तद्भव शब्द किसे कहते हैं ?

२—नीचे लिखे शब्दों में बताइये कौन तद्भव हैं और कौन तत्सम ? तद्भव शब्दों के तत्सम, तत्सम के तद्भव रूप बनाओ ?

हृदय कोमल, करुणा सिंधु स्वामी, पानी, सूरज, सिर, गृहिणी, अग्नि, विरह, द्युति, जोगी, पीठ, घी घी पट्टी, सत्य, शान्ति, सिंदूर, उपहार, धान गाय भैंस, स्वभाव, मर्जार।

३—दश तद्भव और दश तत्सम शब्द बतलाओ ?

४—अरबी फारसी और अङ्गरेज़ी के दश-दश ऐसे शब्द लिखो जो तद्भव रूप में हिन्दी में बोले और लिखे जाते हैं ?

५—अरबी, फारसी और अङ्गरेज़ी के शब्दों का प्रयोग तत्सम रूप में होना चाहिये या तद्भव में युक्ति सहित लिखो ?

६—इन भाषाओं के कुछ ऐसे शब्दों के नाम बताओ जो तत्सम रूप में प्रयुक्त हैं ?

७—शब्दों में कै प्रकार की अर्थ शक्ति है ? कुछ ऐसे शब्द लिखो जिनका अर्थ लक्षणा से जाना जाय ?

८—व्यङ्ग्यार्थ और वाच्यार्थ में क्या भेद है ? वाच्यार्थ जानने के कौन कौन प्रधान साधन हैं ?

शब्दों का वर्गीकरण

व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के तीन भेद हैं:—'रूढ़ यौगिक' और 'योगरूढ़'। 'रूढ़' वह शब्द जो दूसरे शब्दों के योग से न बने हों, जैसेः—नाक, हाथ, रात, रोटी, हाथी आदि

यौगिक, वह शब्द हैं जो दो शब्दों के योग से अथवा किसी शब्द में प्रत्यय लगा कर बनते हैं, जैसेः—गुणी, त्यागी, राजकोष, विश्वामित्र आदि।

योगरूढ़, वह शब्द हैं जो बने तो यौगिक शब्दों की भाँति हों परन्तु वह रूढ़ शब्दों ही की भाँति किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हों; जैसे :—पंक + ज (पंक से है जन्म जिसका) व्युत्पत्ति के अनुसार पंक (कीच) से पैदा होने वाली सब वस्तुओं को पंकज कह सकते हैं, परन्तु केवल 'कमल' के अर्थ ही में उसका प्रयोग होता है।

वाक्यों में प्रयोग के अनुसार शब्दों के आठ भेद हैं :—

वस्तुओं या प्राणियों के नाम बताने वाले शब्द संज्ञा।
संज्ञाओं का कुछ होना या उनका करना बताने वाले शब्द. क्रिया।
संज्ञाओं की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण।
क्रियाओं की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण।
संज्ञाओं के बदले में आने वाले शब्द सर्वनाम।
क्रिया से नामार्थक शब्दों का सम्बन्ध सूचित करने वाले शब्द सम्बन्ध सूचक।
दो शब्दों या वाक्यों को मिलाने वाले शब्द समुच्चय बोधक।
मनोविकार सूचित करने वाले शब्द विस्मयादि बोधक।

उदाहरण :

१—अरे देव ! तेरी लीला अपार है।
अरे—विस्मयादि बोधक अव्यय, इससे मनोविकार प्रगट होता है।
देव—संज्ञा (विशेष्य) एक नाम सूचित होता है।
तेरी—सर्वनाम, देव संज्ञा के बदले में आया है।
लीला—संज्ञा, देव के कर्त्तव्य का नाम है।
अपार—लीला का विशेषण है।
है—क्रिया, यह देव की लीला का होना बताती है।

२—राम और लक्ष्मण एक सुन्दर पहाड़ी पर चढ़ कर दक्षिण की ओर बड़ी गम्भीर दृष्टि से देखने लगे।

जब विशेषण संज्ञा अर्थात् अपने विशेष्य के साथ
है तब केवल लिंग और कहीं कहीं वचन का उसमें वि
होता है।

कारक

संज्ञाओं की उस अवस्था को कारक कहते हैं जि
वाक्य में संज्ञाओं का क्रिया या दूसरी संज्ञाओं से सम्ब
जाना जाता है।

संज्ञाओं की अवस्था अर्थात् कारकों के आठ भेद हैं:—

(१) कर्ता—संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के व्यापार क
होना या करना पाया जाय, उस रूप को 'कर्ता' कहते हैं
जैसे:—हरि खेलता है।

(२) कर्म—संज्ञा के जिस रूप पर क्रिया का फल रहे;
जैसे:—हरि को बुलाओ।

(३) करण—जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करे;
जैसे:—हरि से भिजवाया।

(४) सम्प्रदान—जिसके लिये क्रिया की जाय अथवा
जिसको कुछ दिया जाय, जैसे:—हरि के लिये लाया।

(५) अपादान—क्रिया के विभाग की अवधि को अपादान
कहते हैं; जैसे:—हरि से लाया।

(६) सम्बन्ध—वाक्य में किसी संज्ञा का किसी संज्ञा से
ठीक ठीक सम्बन्ध प्रतीत हो; जैसे:—हरि का घोड़ा है।

(७) अधिकरण—क्रिया के आधार को अधिकरण कहते
हैं; जैसे:—हरि में गुण हैं।

(८) सम्बोधन—संज्ञा के जिस रूप में किसी के द्वारा
चेताने या पुकारने का भाव हो; जैसे:—हे हरि!

कारकों अर्थात् संज्ञाओं के रूपान्तरों का प्रयोग 'कारक'
और 'विभक्ति' वाले शीर्षक में देखिये।

अभ्यास

१—नीचे लिखे वाक्यों के शब्दों का वर्गीकरण करो —

मैं धर्म के लिये प्राण दे सकता हूँ।

घोड़ा से बढ़कर कोई सवारी नहीं।

'हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ'।

'पामर प्रान न जायँ अभागे'।

२—कौन कौन पद विकारी हैं और कौन से अविकारी और क्यों ?

३—कारक के भेद बताओ और ऐसे कौन से कारक हैं जिनका क्रिया से सम्बन्ध नहीं होता ?

४—क्या इन कारकों में कोई ऐसा भी है जिसका वाक्य में किसी दूसरे पद से सम्बन्ध नहीं होता ? (सम्बोधन)

द्वितीय अध्याय

वाक्य-विचार

वाक्य

जिस पद-समूह के योग से कोई पूरा भाव प्रकाशित हो जाय, उसे 'वाक्य' कहते हैं। वाक्य के पदों में परस्पर अपेक्षा होती है। किसी भाव को प्रकाशित करने के लिये व्यवहृत पद-समूह में परस्पर सम्बन्ध होना चाहिये, नहीं तो वाक्य का अर्थ समझ में नहीं आवेगा। वाक्य के अन्तर्गत पदों के सम्बन्ध को 'आकांक्षा' 'योग्यता' और 'क्रम' कहते हैं।

आकांक्षा—मतलब समझने के लिये एक पद को सुन कर दूसरे पद को सुनने की इच्छा होती है, उसे 'आकांक्षा' कहते हैं, जैसे :—'पेड़ से' इसके पीछे यह सुनने की इच्छा होती है 'पत्ते गिरते हैं'। 'वे सब चले गये' इसके पीछे यह कहना पड़ेगा—'जो रात को यहाँ ठहरे थे'।

योग्यता—वाक्य के पदों का अन्वय करने के समय अर्थ सम्बन्धी बाधा न हो; जैसे :—'रेत पर तैरने लगा।' यहाँ योग्यता के अनुसार पद विन्यास नहीं है, रेत पर कोई नहीं तैरता, पानी पर तैरते हैं।

क्रम—योग्यता और आकांक्षा-युक्त पदों के ठीक ठीक स्थापन करने को क्रम कहते हैं, जैसे, 'पानी' इसके पीछे 'बरसता है' लिखना पड़ेगा

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यांशों में शेष पद मिलाकर पूरे वाक्य बनाओ :—

१—पुस्तक रक्खी रक्खी ... ... ।
२—मैं ठोकर खाकर ... ... ।
३—मनोहर वाटिका में जाते ही ।
४—कोयल की मधुर ध्वनि सुनते ही ।
५—बादल ... ... ।
६—सूर्य के प्रचण्ड ताप से ।
७—मोहन कैसा सुन्दर ... ।
८—हरिहर ने ... ... ।

वाक्य खंड ।

वायु वेग से बह रही है। पुष्प खिल रहे हैं। भारतवर्ष सुहावना प्रदेश है। मोहन परोपकारी बालक है।

इन वाक्यों में 'पुष्प' 'वायु' 'भारतवर्ष' और 'मोहन' के नाम हैं। हर एक वाक्य में किसी नाम के सम्बन्ध में कुछ न कुछ कहा गया है।

वाक्य में जिस पदार्थ अथवा प्राणी के सम्बन्ध में कुछ चर्चा की जाती है उसे उद्देश्य कहते हैं। किसी पदार्थ या प्राणी के बारे में जो कुछ वर्णन होता है उसे विधेय कहते हैं। ऊपर के वाक्यों की उद्देश्य-विधेय-तालिका नीचे दी जाती है:-

उद्देश्य	विधेय
पुष्प	खिल रहे हैं
वायु	वेग से बहती है
भारतवर्ष	सुहावना प्रदेश है
मोहन	परोपकारी बालक है

उद्देश्य और विधेय मिलकर पूरा वाक्य होता है।

अभ्यास

नीचे के वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय पृथक् पृथक् करो —

यमुना मन्द मन्द बह रही है। वर्षा होने की संभावना है

वाक्यांश, विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा, यह उद्देश्य और कर्म रूप में आते हैं; जैसे :—

विशेष—राम प्रदर्शिनी देखता है।

सर्वनाम—वह मुझे प्यार करता है।

विशेष्य रूप में आया विशेषण—शिक्षित, अशिक्षितों को घृणा से देखते हैं।

क्रियावाचक संज्ञा—खाना कहने से भोजन करना समझा जाता है।

वाक्यांश—बिना पूछे ले जाना चोरी करना कहाता है।

जिन पदों के नीचे रेखा है वह उद्देश्य और जिनके ऊपर रेखा है वह कर्म है।

विशेषण, विशेषण भाव वाले विशेष्यादि पद और वाक्यांश के मिलने से उद्देश्य व कर्म बढ़ता है; यथा :—

विशेषण द्वारा—सुन्दर बालक उत्तम पुस्तक पढ़ता है।

सम्बन्ध पद द्वारा—राम का मित्र हमारी बात सुनता था।

विशेष्य द्वारा—राजा रामचन्द्र पुरोहित वशिष्ठ से कहने लगे।

वाक्यांश द्वारा मंत्री ने विद्रोह का सम्वाद पाकर उसने लिन सद को पकड़वा लिया

नीचे की रेखा वाले पदों से विशेष्य और ऊपर की रेखा वाले पदों से कर्म बढ़ाया गया है

इस प्रकार के दो या बहुत से पदों के समुदाय से भी उद्देश्य और कर्म बढ़ाया जा सकता है यथा .

असमापिका क्रिया द्वारा भी विधेय परिवर्तित होता है, यथा:—दौड़ते दौड़ते कहने लगा; मैं सुन्दर दृश्य देखते देखते अवाक् रह गया।

अर्थ के विचार से विधेय-वर्द्धक के छः भेद होते हैं, जैसे:—

कालवाचक—कल आऊँगा; उसका उत्तर आने तक ठहरूँगा।

रीतिवाचक—धीरे धीरे ज्ञान होता है; शान्ति से सोचो।

परिमाणवाचक—थोड़ा सोचना भी चाहिये।

कारण वाचक—तुम्हारे दर्शन से प्राण बच गये।

कार्यवाचक—मेरे लिये ऐसा क्यों करते हो।

स्थान वाचक—मेरे पास वह आया, यहाँ से चला गया।

(२) जटिल वाक्य

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय मुख्य हो और उसकी सहायक एक या कई क्रियाएँ हों उस को जटिल वाक्य कहते हैं; यथा:—'मैं जानता हूँ उसने बड़ा अन्याय किया है।' 'किस प्रकार ऐसा हुआ यह मैं नहीं समझ सकता।'

जटिल वाक्य का जो अंश प्रधान उद्देश्य और प्रधान विधेय है, उसको प्रधान अंश, और अन्य भाग को आनुषङ्गिक कहते हैं। पहले उदाहरण में 'मैं जानता हूँ' प्रधान अंश और 'उसने बड़ा अन्याय किया' यह इस अंश का आनुषङ्गिक [illegible]। आनुषङ्गिक अंश दो प्रकार का होता है—एक विशेष्य-[illegible]व प्राप्त दूसरा विशेषण भाव प्राप्त।

पहुँचायगी, अर्थात् यह औषधि खाते ही लाभ पहुँचायगी। प्रथम उदाहरण वाक्य में, आनुषङ्गिक वाक्य उद्देश्य का, दूसरे में कर्म का, तीसरे में विधेय का विशेषण है। इसलिये प्रथम दो 'विशेषण' और अन्तिम आनुषङ्गिक वाक्य क्रिया विशेषण भाव वाला है।

(२) यौगिक वाक्य

जिसमें अनेक व कुछ सरल और कुछ जटिल वाक्यों का मेल हो उसे 'यौगिक वाक्य' कहते हैं; जैसे :—राम तो आये हैं पर हरि नहीं आवेंगे। राम आँयगे अथवा हरि आँयगे। यहाँ भिन्न भिन्न सरल वाक्य 'और' 'अथवा' 'किन्तु' योजकों द्वारा मिल कर यौगिक वाक्य होते हैं।

अभ्यास

१—नीचे लिखे वाक्यों के कारण सहित प्रकार बतलाओ।

मुझे तुम से यह कहना था कि कभी पत्र तो भेज दिया करो। शीतल मन्द-सुगन्ध वायु बहती है। गीत नाद को सुनकर मेरा चित्त प्रसन्न हुआ। मुझे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की बैठक में सम्मिलित होना है। जीवन-पथ-प्रदीप जैसा स्पष्ट दुख है, स्वर्ग-प्रदीप भी वैसा ही दुख है। भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है और दूसरों के समझता है। यहाँ भक्तजन हैं जिन्हें हम प्यार करते हैं। स्वास्थ्य को खोकर जितना प्राप्त करने से क्या होता है। धर्म ही मनुष्य का सदा मित्र है। जो मित-व्ययी हैं वही सब कुछ कर सकते हैं।

२—सरल-वाक्य और मिश्रित-वाक्य में क्या अन्तर है? दोनों प्रकार के पाँच पाँच वाक्य लिखो।

३—उद्देश्य और विधेय किन किन पदों द्वारा बढ़ सकते हैं नीचे लिखे वाक्य के उद्देश्य को उचित प्रकार से बढ़ाओ।

"मोहन ने पारितोषिक पाया"

"मोहन" कर्ता को विशेषण द्वारा, विशेष्य द्वारा, समकारक द्वारा और सर्वनाम द्वारा बढ़ाओ।

"पारितोषिक पाया" विधेय को, करण, अधिकरण सम्बन्ध अपादान, द्वारा बढ़ाओ।

वाक्य विश्लेषण

सरल वाक्यों का विश्लेषण इस प्रकार होगा :—

१—पहले उद्देश्य-पद निर्देश करना पड़ेगा।

२—जिन जिन पदों के द्वारा उद्देश्य बढ़ाया है उनका निर्देश करना पड़ेगा।

३—विधेय पद का निर्देश। यदि विधेय पद पूर्ण अर्थ प्रकाशक नहीं है तो पूर्ण-अर्थ प्रकाशक अंश भी उसी के साथ निर्देश करना पड़ेगा।

४—यदि विधेय सकर्मक किया है तो उसका कर्म निर्देश करना पड़ेगा।

५—कर्म पद जिन पदों के द्वारा बढ़ाया गया है उनका निर्देश करना पड़ेगा।

६—विधेय पद जिन सब पदों के द्वारा बढ़ाया गया है उन सबका निर्देश करना पड़ेगा।

विश्लेषण चित्र

(१) बन्दर की टाँगें मज़बूत होती हैं।

(२ कल से पानी बरस रहा है।

वाक्य—"आज वह न आवेंगे, मैंने पहिले ही कहा था"।
इस जटिल वाक्य में 'मैंने पहिले ही कहा था' यह प्रधान अंश और 'वह आज नहीं आवेंगे' आनुषङ्गिक अंश है।"

(१)
उद्देश्य— मैंने
उद्देश्य विस्तार
विधेय कहा था
कर्म रूप वाक्य आज हरि नहीं आवेंगे।
विधेय विस्तार पहिले ही (काल वाचक)

(२) 'आज हरि नहीं आवेंगे' इस वाक्य में—
उद्देश्य—हरि
विधेय—नहीं आवेंगे
विधेय विस्तार—आज

यौगिक वाक्य

जिन सब वाक्यों से मिलकर 'यौगिक वाक्य' बना है, उनका अलग २ विश्लेषण कर के पीछे जिन योजकों द्वारा वह मिले हैं उनको दिखाना चाहिये। और यदि यौगिक वाक्य सरल वाक्यों से बना हो तो सरल वाक्य की रीति के अनुसार और यदि जटिल वाक्यों से बना हो तो जटिल वाक्य की रीत्यानुसार विश्लेषण करना चाहिये।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों का विश्लेषण करो :—

(१) राजा महानन्द एक दिन हँसते २ मकान में आए थे।

(२ 'शकटार शूद्र और राक्षस ब्राह्मण था सो दोनों अत्यन्त बुद्धिमान् और महा नीतिज्ञ-सम्पन्न थे।'

(३ अन्त में कालाज्वर की पीड़ा से एक एक करके उसके परिवार के सब लोग मर गये।

'शिष्यों को' गुरु जी की आज्ञा मानती चाहिये।

भेट को' लाया हूँ।

'उनको' क्या भेजना चाहिये।

अपादान

राम 'घोड़े से' गिर पड़ा।

गिरीश आज 'दिल्ली से' आया है।

'उससे' यह ढंग ही जुदा है।

यह पुस्तक 'उससे' भिन्न है।

उन्हें राम से परिचय है।

श्रीमान् 'गिरधर शर्मा से' मेरा साक्षात् हुआ।

'धन से' विद्या उत्तम है।

'दिल्ली से' आगरा दूर है।

हैदराबाद 'मध्य प्रान्त से' परे है।

यह व्यक्ति 'बुद्धि से' हीन है।

बुढ़ापे में मनुष्य 'चलने फिरने से' रहित हो जाता है।

मूर्ख 'विद्या से' अनभिज्ञ होते हैं।

माता 'पिता से' अधिक पूज्य है।

हिमालय 'भारत से' उत्तर ओर है।

'मथुरा से' वृन्दावन पाँच मील है।

'तन-मन धन से' सेवा करो।

जाड़े के दिनों में 'दस बजे से' चार बजे तक स्कूल खुला करते हैं।

यह 'सिंह से' डर गया।

राम 'घर से' भाग गया।

सम्बन्ध कारक

'महात्मा का' का उपदेश है।

'पण्डित का' पाण्डित्य नहीं रहा।

'कालू की' भीत है।

'सुवर्ण के' आभूषण बने हैं।

'राजा के' समान मंत्री दयालु नहीं।

'काम के' सदृश फल नहीं।

'राजा की' आज्ञा के अनुसार।

'भाई की' प्रतीक्षा की।

'सिर के' बाल सफ़ेद होगये।

'काठ की' गाय है।

'बिहारी की' सतसई पढ़ो।

'राजा की' पुत्री चली गई।

तीन हाथका डण्डा' लाओ।

'जमुनाका' घाट बह गया है।

दस काम का फ़र्क' है।

प्रश्नोत्तर के सिलसिले में कभी २ सम्बन्धी-पद पीछे आता है; जैसेः—यह पवित्र काम किसका है ?

करण पद कर्त्तृ पद के पीछे और कर्म से प्रथम आता है, और उसका विशेषण उससे पूर्व रहता है; जैसेः—उन्होंने बड़े परिश्रम से इस कार्य का साधन किया ; उसने दृढ़ और पवित्र प्रेम द्वारा अपने हृदय को विकसित किया।

जिस सम्पूर्ण अर्थ में अपादान कारक होता है उसी सम्पूर्ण अर्थ-बोधक पद से पूर्व अपादान पद रहता है; जैसेः— "वह तुम्हारे इस काम से असन्तुष्ट है, वह कल दो पहर घर से चल खड़ा हुआ; वह अपने पापों से भयभीत होकर त्राहि त्राहि करने लगा।"

विशेषण सहित कर्म, और अधिकरण पद अपादान से पीछे आते हैं; किन्तु करण और क्रिया-विशेषण अपादान से पहिले ही आते हैं; जैसेः

"उसने हमारे कंधे से दुशाला उतार लिया।"

मैंने मातृभूमि के वक्षस्थल से रज उठा कर सिर पर धारण की। उन्होंने अपने पवित्र उपदेश द्वारा लोगों के हृदय से अन्धकार दूर किया। वह यत्नपूर्वक अपने मार्ग से विघ्नों को दूर करता गया।

[illegible] — स्वार्थ त्याग [illegible] उसने [illegible] पर [illegible] अनर्थ किया

प्रायः कालवाचक अधिकरण वाक्य में पहले ही आता है; जैसे :—"रात में बड़ी ओस पड़ती है, निशीथ में निस्तब्धता का साम्राज्य स्थापित होता है।"

जहाँ पर कालवाचक और स्थानवाचक दोनों एक काल में अधिकरण हों, वहाँ पहिले कालवाचक पीछे स्थानवाचक पद आते हैं, जैसे :—"ईश्वर प्रति समय प्रति स्थान में है।"

एक शब्द के दो बार साथ साथ आने को वीप्सा कहते हैं। वीप्सा द्वारा सम्पूर्णता, बहुत्व, प्रकार, एक-कालीनता, निकटता, केवलता आदि अर्थ प्रकाशित होते हैं, जैसे :—

घर घर में यह चर्चा फैल गई, हमारे जंगल में बड़े बड़े वृक्ष हैं।

वह धीरे धीरे जा रहा था; गीता पढ़ते पढ़ते उसके प्राण पखेरू उड़ गये। कानोंकान यह खबर चारों ओर फैल गई।

बहुत से सांकेतिक-अव्यय वाक्यों में साथ २ आते हैं, जैसे :—जब तक, तब तक, यद्यपि तथापि, जो और तो; आदि आदि।

प्रश्न-वाचक सर्वनाम उस पद से प्रथम आता है, जिस के विषय में प्रश्न हो, जैसे :—यह कौन पुस्तक है?

यदि पूरा वाक्य ही प्रश्न हो तो वह वाक्य में पहले ही आता है, जैसे :—क्या आप वह पुस्तक पढ़ने को कल लाये थे?

कभी कभी वाक्य में प्रश्न वाचक सर्वनाम नहीं होता: केवल प्रश्न-वाचक चिह्न ही अन्त में रहता है, जैसे :—वह गया?

पद-परिचय

वाक्य के पदों का पारस्परिक सम्बन्ध तथा व्याकरण सम्बन्धी विशेषताओं का जहाँ कथन किया जाय, उसे पद-परिचय, पद-व्याख्या या पदान्वय कहते हैं।

अनेक वैयाकरण वाक्य में पाँच प्रकार के पद मानते हैं, विशेष्य (संज्ञा), विशेषण, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय।

विशेष्य के परिचय में—प्रकार, भेद-जाति-वाचक आदि, लिङ्ग, वचन, पुरुष, कारक, विभक्ति, किस क्रिया के साथ अन्वय है। क्रिया-वाचक विशेष्य में लिङ्ग, वचन, पुरुष नहीं लिखा जाता।

सर्वनाम—जिस विशेष्य का है, उसी विशेष्य के अनुसार लिङ्ग वचन होता है पुरुष और कारक में भेद हो सकता है।

विशेषण—प्रकार भेद और किसका विशेषण है।

क्रिया—पूर्व-कालिक या समापिका, सकर्मक, अकर्मक, द्विकर्मक, कर्तृवाच्य या भाववाच्य काल, पुरुष, वचन, कर्त्ता, यदि सकर्मक हो तो कर्म।

एक ही शब्द का भिन्न भिन्न पदों में प्रयोग

[illegible] विशेषण का [illegible] में विशेष्य की भाँति आते [illegible] लिङ्ग वचन होते हैं, जैसे :—[illegible]

[illegible]

कुछ गुणवाचक-विशेष्य कभी विशेष्य और कभी विशेषण हो जाते हैं। सुवर्ण-मंदिर में 'सुवर्ण' विशेषण है और मंदिर विशेष्य।

कुछ संख्या वाचक शब्द जब केवल १०, १२, १५ संख्या हों तो, संख्या वाचक विशेष्य और अन्य पद के संख्या-वाचक हों तो, संख्यावाचक विशेषण होते हैं, जैसे: ३ घोड़े, ४ गाय।

कभी जाति-वाचक शब्द विशेष्य और कभी विशेषण होता है, विद्या पढ़ना ब्राह्मण का धर्म है' —यहाँ ब्राह्मण विशेष्य है। और "ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर"—यहाँ ब्राह्मण विशेषण है।

सर्वनाम भी विशेष्य-रूप में आता है—यह यही स्पष्ट है, यहाँ "यह" सर्वनाम विशेष्य-रूप में आया है। सर्वनाम कभी कभी विशेषणरूप में भी आता है, जैसे :—'यह मनुष्य देशभक्त है।"

कभी कभी क्रिया-पद भी विशेष्य-रूप में आता है, जैसे:— "खा" धातु के आगे 'ना' प्रत्यय लगाने से 'खाना' पद बनता है। यहाँ 'खाना' विशेष्य है।

परिचय करते समय गद्य का एक एक पद लेते हैं और पद का गद्य-क्रम (अन्वय) कर लेते हैं, फिर यथाक्रम परिचय करते जाते हैं।

उदाहरण

कुसुमित-कुंज में से, जो कली न खिली है,
वह विकसित प्यारे पुष्प से भी भला है।
सखि, कब मन जाता न कुंज में मालती की,
सुख सुमन कलिकाली ऊपरी की छटायें॥

[हे] अलि, तू कुवलय-कुल में से तो अभी निकला है [और बहु विकसित प्यारे पुष्पों में भी रमा है [इसलिये] अब तू मालती की कुञ्ज में मत जा [और] मुझ अकुलाती ऊबती की व्यथाएँ सुन।

अलि—जाति-वाचक संज्ञापद पुल्लिङ्ग, एक वचन, मध्यम-पुरुष, सम्बोधन कारक।

तू—सर्वनाम पुरुषवाची, मध्यमपुरुष, पुल्लिङ्ग, एक वचन, कर्त्ता, मिश्रित वाक्य की दो क्रियाएँ "निकला है" और "रमा है" का।

कुवलय—जाति वा० संज्ञापद, एक वचन, पुल्लिङ्ग, अन्य पुरुष, कुल का सम्बन्ध-बोधक विशेषण।

कुल में से—जाति-वाचक संज्ञापद; एक वचन, पुल्लिङ्ग, अपादान कारक।

अभी—कालवाचक-क्रिया-विशेषण "निकला है क्रिया का"।

निकला है—क्रियापद, अकर्मक, कर्त्तृप्रधान, आसन्न भूत-काल, पुल्लिङ्ग, एक वचन, निकला से बना है, इसका कर्त्ता 'तू'।

और—समुच्चायिक अव्यय पद "तू कुवलय-कुल में से अभी निकला है और [तू अभी] बहु-विकसित प्यारे पुष्पों में भी रमा है"। इन दो सरल वाक्यों का योजक है।

बहु—विशेषण (विकसित विशेषण का।)

विकसित—विशेषण (पुष्प विशेष्य का।)

पुष्प में—जाति-वाचक विशेष्य (संज्ञा) पद, एक वचन, पुल्लिङ्ग अन्य पुरुष, अधिकरण व्यापाधिकरण 'रमा है' क्रिया का आधार।

भी—निश्चय बोधक अव्यय

रमा है—क्रिया-पद अकर्मक, कर्तृप्रधान, आसन्नभूतकाल, पुल्लिङ्ग एक वचन, रमना धातु की, इसका कर्ता 'तू' इसका आधार 'पुष्प'।

तू—उपर्युक्त सम्पूर्ण तू का परिचय; (मत) जा और सुन क्रियाओं का कर्ता।

अब—क्रिया-विशेषण, कालवाचक (मत) जा क्रिया का।

मालती का—जाति वाचक संज्ञापद, एक वचन, स्त्रीलिङ्ग, अन्य पुरुष सम्बन्ध पद, कुञ्ज से सम्बन्ध, (सम्बन्ध-बोधक विशेषण) कुञ्ज है विशेष्य का।

कुञ्ज में—जाति वाचक संज्ञापद, एक वचन, स्त्रीलिङ्ग, अन्य पुरुष, अधिकरण कारक, (मत) जा क्रिया का आधार।

मत—भाव-वाचक क्रिया-विशेषण, (जा क्रिया का)

जा—क्रिया पद, अकर्मक, कर्तृवाच्य, विधि एक व०, पुल्लिङ्ग, कर्ता 'तू'।

[illegible] पद:

मुझ—सर्वनाम, उत्तम पुरुष एक वचन, स्त्रीलिङ्ग, क्योंकि राधिका का कथन है।

अकुलानी—(अकुलानी हुई) क्रिया द्योतक संज्ञा। अकुलाना, ऊबना क्रियाओं की द्योतक।

ऊबनी—क्रियाद्योतक-संज्ञा।

व्यथाएँ—जातिवाचक संज्ञापद* बहुवचन स्त्रीलिङ्ग, अन्य पुरुष, कर्म कारक की अवस्था, 'सुन' क्रिया का कर्म

सुन—क्रिया पद, सकर्मक, कर्तृवाच्य, विधिक्रिया, इसका कर्म 'व्यथाएँ' कर्ता 'तू'।

* भाव-वाचक-संज्ञाएँ बहुवचन में जाति-वाचक हो जाता है।

मैं परिश्रम करूँगा, सुख मिलेगा। (इच्छा बोधक)
जो परिश्रम नहीं करता, उसे सुख नहीं मिलता। (निषेधवाचक)
परिश्रम करो सुख मिलेगा। (आज्ञा बोधक)
यदि परिश्रम करोगे तो सुख मिलेगा। (संकेत वाचक)

अभ्यास।

नीचे के वाक्यों को यथा शक्ति अनेक प्रकार के वाक्यों में बदलो।

१—ज्ञान से बुद्धि निर्मल होती है।
२—नम्रता से बरतना सदा मेल, जोल और आनन्द में प्रतीत होता है।

कर्त्ता विशेषण—'सूर्यवंशावतंश' 'भगवान्' राम ने··· ।
कर्म विशेषण—'सुदृढ़' लंका को··· ।
करण विशेषण—'अपूर्व' वीरता से ।
सम्प्रदान विशेषण—'सती साध्वी' सीता के लिये ।
अपादान विशेषण—'अगाध' समुद्र से पार ··· ।
अधिकरण विशेषण—'भीषण' युद्ध में··· ।
सम्बन्ध विशेषण—'दुर्दम' दैत्यों की लंका ।
क्रिया विशेषण—'दृढ़ता पूर्वक' विजय किया ।

अन्त में वाक्य हुआ ।

हे पार्वती,

सूर्यवंशावतंश भगवान् राम ने सती-साध्वी सीता के लिये अपूर्व-वीरता से चढ़ाई कर के अगाध-समुद्र से पार दुर्दम-दैत्यों की सुदृढ़ लंका को भीषण-युद्ध में दृढ़ता-पूर्वक विजय किया ।

अर्थ की अपेक्षा रखते हुये वाक्य में आये हुए पद और वाक्यांश को बढ़ा कर वाक्य-विस्तार करते हैं ।

ज्ञानी मनुष्य ही सच्चा सुखी है ।

जिसने ज्ञान प्राप्त किया है वही मनुष्य सच्चा सुखी है ।

नीति धर्म-पालक मनुष्य ही चारों फल प्राप्त करता है ।

जिसने नीति और धर्म का पालन किया है वही मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-नामक चारों फल प्राप्त करता है ।

वाक्य के उद्देश्य तथा विधेय अंशों को विशेषण और गुणवाचक पदों के योग से बढ़ा सकते हैं ।

महाराणा प्रताप ने प्रण पालन किया ।

'परम-प्रतापान्वित भारत-केसरी मेवाड़ाधिपति' महाराणा प्रताप ने पवित्र वीरोचित, प्रण का 'सम्यक प्रकार से' पालन किया ।

सरल—तुमने सर्वथा असत्यमय दान कहा ।

इन दोनों प्रकार के परिवर्तनों में वाक्य-संकोचन के नियमों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये ।

सरल-वाक्यों को यौगिक-वाक्य बनाना

सरल-वाक्य के किसी वाक्यांश को स्वतन्त्र वाक्य बनाकर 'और' 'अथवा' 'किन्तु' 'इसलिए' आदि अव्ययों के प्रयोग से यौगिक-वाक्य बना लेना चाहिए। कहीं कहीं पूर्वकालिक क्रिया को समापिका क्रिया कर लेने से यौगिक-वाक्य बन जाता है।

सरल—स्नानादि से निवृत्त हो कर, गीता-रहस्य का अध्ययन किया।

यौगिक—स्नानादि से निवृत्त हुआ और गीता-रहस्य का अध्ययन किया।

सरल वाक्य के 'स्नानादि से निवृत्त होकर' इस वाक्यांश को यौगिक-वाक्य का 'स्नानादि से निवृत्त हुआ' यह स्वतन्त्र वाक्य बना लिया।

सरल—पढ़ने में शिथिलता करने से दुःख होता है।

यौगिक—पढ़ने में शिथिलता मत करो, इससे दुःख होता है।

सरल—दुर्बलतावश उपस्थित [illegible] हो सका।

[illegible]गिक—वह दुर्बल था [illegible] उपस्थित नहीं हो सका।

[illegible]ौगिक-वाक्य को [illegible] में बदलना

[illegible]-वाक्य के एक [illegible] वाक्यांश [illegible]

[illegible] समापिका [illegible]

तो' आदि नित्य-सम्बन्धी अव्ययों द्वारा जोड़ देते हैं, कहीं नित्य सम्बन्धी पद लुप्त रहते हैं।

सरल-वाक्य—भारतवासियों के सम्राट् आज हमारे बीच में नहीं हैं।

जटिल—'जो' भारत-सम्राट् थे, 'वह' आज हमारे बीच में नहीं हैं।

सरल—उसके दुराचारों को तुमने कैसे जान लिया।

जटिल—उसके जो'दुराचार थे,'उन्हें'तुमने कैसे जानलिया।

सरल—सज्जन मनुष्य कटु वचन नहीं कहते।

जटिल—'जो' सज्जन मनुष्य हैं, वे' कटु वचन नहीं कहते।

सरल—उसकी नीति को मैं जानता हूँ।

जटिल—उसकी जो' नीति है, 'उसे' मैं जानता हूँ।

जटिल-वाक्य को सरल-वाक्य बनाना

किसी जटिल वाक्य के अन्तर्गत सहायक वाक्य को पद या वाक्यांश के रूप में लाकर सम्बन्ध-बोधक दोनों पदों को हटा देना चाहिये, सरल-वाक्य बन जायगा, इसमें अर्थ और काल का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

जटिल वाक्य—'जब तक' मैं अपना कार्य्य साधन न कर लूँगा, 'तब तक' विवाह न करूँगा।

सरल-वाक्य—अपना कार्य्य साधन न करने तक विवाह न करूँगा।

जटिल—तुमने मुझसे जिस प्रकार' कहा था 'उसी के अनुसार' कार्य्य कर रहा हूँ।

सरल—तुम्हारे कथनानुसार कार्य्य कर रहा हूँ।

जटिल—तुमने 'जैसी' बात कही 'वह' सर्वथा असम्भव है।

यौगिक-वाक्य—निष्काम-कर्म करो, तुम्हारा मन पवित्रता से भर जायगा।

जटिल-वाक्य—यदि निष्काम-कर्म करोगे तो तुम्हारा मन पवित्रता से भर जायगा।

यौगिक वाक्य—वह विद्वान् नहीं है, परन्तु बुद्धिमान है।

जटिल-वाक्य—यद्यपि वह विद्वान नहीं है, तथापि बुद्धिमान है।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में बतलाओ किस प्रकार के वाक्य हैं और क्यों ? अर्थ की रक्षा करते हुए यथासंभव इन्हें दूसरे प्रकार के वाक्यों में परिवर्तित करो :—

१—"आपको यह समझ लेना चाहिये कि आपके ऊपर केवल, आपके और आपके परिवार के पालने का ही भार नहीं है परन्तु इस जननी-जन्म-भूमि के प्रति भी आपके बहुत से कर्तव्य हैं।"

२—"आपके यह दिन आने पर मातृ-भूमि आप से बहुत कुछ आशा रखेगी।"

३—"वह दिन भी निकट है जब आप सब शिक्षा पाकर नागरिकों का भार और जवाबदेही अपने ऊपर लेंगे।"

४—कर्तव्य कर्म का पालन करना ही मनुष्य का धर्म है।

५—[illegible]

६—[illegible]

वाक्य-रचना का अभ्यास

(३)

वाच्य और वाच्यान्तर

वाच्य के अनुसार वाक्य के तीन भेद हैं, कर्तृ, कर्म और भाव।

जिस वाक्य में कर्ता अपनी अवस्था (प्रथमा) में हो, और कर्म अपनी अवस्था (द्वितीया) में, क्रिया-पद स्वतन्त्र न हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे :—

'बालक रामायण पढ़ता है' लड़का गीत गाता है।'

जिस वाक्य में कर्ता करण की अवस्था (तृतीया) में, कर्म (कर्ता की अवस्था) प्रथमा में प्रयुक्त हो और क्रिया कर्म के अनुसार हो, उसे कर्म-वाच्य कहते हैं; जैसे :—लड़के से गीत गाया जाता है 'कपड़ा सीया जाता है।'

जिस वाक्य में कर्म नहीं होता, कर्ता तृतीया में होता है, क्रिया स्वयं प्रधान होती है, उसे भाव-वाच्य कहते हैं, जैसे:—श्याम से पढ़ा नहीं जाता।

कर्म-कर्तृवाच्य—जिस वाच्य में कर्म-पद ही कर्ता की भाँति हो अर्थात् बिना कर्ता के स्वयं सिद्ध हो उसको कर्म-कर्तृवाच्य कहेंगे, जैसे :—

दीवार बन रही है।' 'घड़ी ठीक हो रही है।'

सकर्म क्रिया के प्रयोग में कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य और कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य और अकर्मक क्रिया में कर्तृवाच्य से भाववाच्य और भाववाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन करने का नाम वाच्य परिवर्तन है।

कर्तृवाच्य में कर्म होता भी और नहीं भी, कर्मवाच्य में कर्म अवश्य होता है किन्तु भाववाच्य में कर्म नहीं होता।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य

कर्तृ०—ब्राह्मण ने [illegible] [illegible] मूर्तियाँ

कर्म०—मोहन से मेरी कलम चुराई गई।

कर्तृ०—पं० अयोध्यानाथ ने कांग्रेस स्थापित की।

कर्म०—पं० अयोध्यानाथ द्वारा कांग्रेस स्थापित की गई।

कर्तृ०—महात्मा ऐण्ड्रयूज़ ने अकाल-पीड़ितों की सहायता की।

कर्म०—महात्मा ऐण्ड्रयूज़ द्वारा अकाल-पीड़ितों की सहायता की गई।

कर्तृवाच्य—पं० गोविन्दसहाय ने फ़िजी की रिपोर्ट लिखी।

कर्मवाच्य—पं० गोविन्दसहाय द्वारा फ़िजी की रिपोर्ट लिखी गई।

कर्तृवाच्य—चौकीदार ने चोर पकड़ लिया।

कर्मवाच्य—चौकीदार से चोर पकड़ा गया।

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य

कर्मवाच्य—साधु से कैसा गाया जाता है।

कर्तृवाच्य—साधु कैसा गाना गाता है।

कर्मवाच्य—भगवान् कृष्ण द्वारा उपदेश दिया गया।

कर्तृवाच्य—भगवान् कृष्ण ने उपदेश दिया।

कर्मवाच्य—वेदव्यास द्वारा महाभारत रचा गया।

कर्तृवाच्य—वेदव्यास ने महाभारत रचा।

कर्मवाच्य—मुझ से पुस्तक पढ़ी जाती है।

कर्तृवाच्य—मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य

कर्तृ०—मैं नहीं उठता हूँ।

भाव०—मुझसे नहीं उठा जाता।

कर्तृ०—मैं रात भर नहीं सो सकता।

भाव०—मुझ से रात भर नहीं सोया जाता।

कर्तृ०—रात भर कोई नहीं जागा।
भाव०—रात भर किसी से नहीं जागा गया।

भाववाच्य से कर्तृवाच्य

भाववाच्य—गाय से चला नहीं जाता।
कर्तृवाच्य—गाय नहीं चलती।
भाववाच्य—तुमसे खाया जायगा।
कर्तृवाच्य—तुम खाओगे।
भाववाच्य—राम से सोया नहीं जाता।
कर्तृवाच्य—राम नहीं सोते।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में उनका भेद बतलाकर वाच्य परिवर्तन करो—
बढ़ई ने किवाड़ बनाये हैं। राम ने जप किया है। दर्जी से कपड़ा काटा गया। घोड़े से चला नहीं जाता। मैं रात को नहीं पढ़ूँगा। वह कब नहीं जा सकता। तुम हिन्दी में विज्ञान के कई ग्रन्थ लिखोगे। तुम सच नहीं बोले।

वाक्य-रचना का अभ्यास

(४)

अलंकृत वाक्य-रचना

अच्छी रचना के लिए वर्णनीय विषय का परिमार्जित ज्ञान, कल्पना शक्ति की सर्जकता और भाषा पर पूर्ण अधिकार होने की परम आवश्यकता है। जिस भाषा में अलंकारों का प्रयोग किया जाता है उसे अलंकृत रचना कहते हैं। हिन्दी में अलंकारों के दो विभाग किये हैं—शब्दालंकार और अर्थालंकार। जब रचना में शब्द सम्बन्धी चमत्कार होता है तो उसे शब्दालंकार कहते हैं। [illegible] मन-मयूर मस्त होकर नृत्य करने लगा" इस वाक्य में म और र के प्रयोगों में स्पष्ट चमत्कार है।

शब्दालंकारों के कई भेद हैं :—

एक से अक्षरों की आवृत्ति में अनुप्रास होता है: जैसे :—मन-मधुप-मत्त में 'म' की, चतुर चितेरे में 'च' और 'त' की, बोध और सोध में 'ध' की समता है और एक ही अर्थ में पद व पद-समूहों की समता में लाटानुप्रास होता है: जैसे :— 'करि करुणा करुणा-रतन' में करुणा की आवृत्ति एक ही अर्थ में है। जब पद-खण्ड, पद या पद-समूह की आवृत्ति भिन्न भिन्न अर्थों में होती है, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे :—'असरन सरन चरन गनपति के' में रन की आवृत्ति भिन्न भिन्न अर्थों में होती है। जब एक ही शब्द दो या दो से अधिक अर्थों में आता है तो श्लेष होता है; जैसे :- 'मतवाले आपस में लड़ते हैं।' यहाँ मतवाले के दो अर्थ हैं- उन्मत्त और मत के (मज़हबी लोग)

जहाँ अर्थ-सम्बन्धी चमत्कार होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार १०० से ऊपर हैं। हर एक के अनेक सूक्ष्म भेद हैं। इनमें उपमा (तुलना) सब में मुख्य है।

उपमा—किसी के सौन्दर्यादि का परिचय देने के लिये किसी ऐसी वस्तु से तुलना करनी पड़ती है जिसमें सौन्दर्यादि गुण की लोक में प्रसिद्धि हो। जिस वस्तु की समता की जाती है वह उपमेय और जिस वस्तु से समता की जाती है उसे उपमान कहते हैं। वह गुण जिससे दोनों में समता की जाती है समान धर्म कहलाता है।

उपमा—उपमान और उपमेय का एक ही धर्म कथन किया जाता है जैसे :—मुख चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है

रूपक—समान-धर्मी उपमेय उपमानों का अभेद कहा जाता है, जैसे :—मुख चन्द्र है।

उत्प्रेक्षा—उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, जैसे :—मुख मानों चन्द्र है।

प्रतीप—उपमान की उपमेय से समता की जाती है, जैसे : -मुख सा चन्द्र है।

अपह्नुति—उपमेय का निषेध करके उपमान का आरोप किया जाता है, जैसे :—मुख नहीं चन्द्र है।

परिणाम—उपमेय उपमान मिल कर काम करते हैं, जैसे :—मुख-चन्द्र आनन्द देता है।

स्मरण—उपमान को देखकर उपमेय याद आता है, जैसे :—चन्द्रमा को देखकर मुख याद आता है।

सन्देह—उपमेय उपमान में सन्देह रहता है, जैसे :—मुख है या चन्द्र।

इन्हीं भिन्न भिन्न अलंकारों को गद्य और पद्य के वाक्यों में प्रयोग करते हैं तो उस रचना को अलंकृत कहते हैं।

अभ्यास के लिये साधारण वाक्यों को अलंकृत करना चाहिये और अलंकृत वाक्यों को साधारण भाषा में लिखना चाहिए।

साधारण वाक्य	अलंकृत वाक्य
सवार आता है	विद्युत समान चञ्चल घोड़े पर चकाचौंध सा करता हुआ सवार आता है उपमा अलंकार।

...म शरासन की ओर चले	दिनकर-कुल-कमल-दिवाकर राम शिव-शरासन की ओर मत्त-गज-गति से चले (रूपक अलंकार)
...न्ध्या हो गई	सूर्य भगवान् ने अस्ताचल की शिखरों पर आरोहण किया। भगवान् पद्मनी-नायक ने दिन भर के परिश्रम से व्याकुल हो विश्राम के लिए अस्ताचल पर्वत का आश्रय लिया।
...ामचन्द्र ने शिव-धनुष चढ़ा ...र सीताजी को मोहित कर ...लिया।	सूर्यवंशावतंस रामचन्द्र ने अनायास ही शिव-धनुष पर ज्या रोपण कर वैदेही के हृदय को सहज आकर्षित कर लिया।
यह पक्षी उनको देने आई है।	यह पक्षि-दल उनके चरण कमल में अर्पण करने आई हैं।
सूर्योदय से आकाश में लाली छा गई और अँधेरा दूर हो गया	सूर्य के उदय होने से गगन मण्डल रक्त वर्ण हो रहा था और [illegible]
[illegible]	[illegible]

वाक्य-रचना का अभ्यास

(५)

वाक्यों के रूपान्तर

सरल वाक्यों को विशेषणों, अलंकारों तथा दूसरी भाँति के विविध कौशलों द्वारा रूपान्तरित कर सकते हैं।

सवेरा हो गया।

प्रभात हो गया। सूर्योदय हो गया। रात्रि का अवसान हो गया। रात बीत गई। भगवान् कमलिनी-वल्लभ उदयाचल पर अपनी प्रभा दिखाने लगे। भगवान् सूर्य्य ने संसार का अंधकार दूर कर दिया। भगवान् भास्कर भासमान हुए। ऊषा की किरणें प्रस्फुटित हुईं। अरुणोदय हुआ। भगवान् अंशुमाली ने रश्मिराशि फैला दी।

सुख हुआ।

हृदय में आनन्द भर गया। हृदय की कली खिल गई। हृदय-कलिका प्रस्फुटित हुई। आनन्द-तरङ्गों में गोते लगाने लगा। आनन्द-समुद्र उमड़ पड़ा। सुख-समुद्र में उत्ताल-तरंगें उठने लगीं। आनन्द का पारावार नहीं रहा। सुख की सीमा न रही।

चन्द्रमा उदय हुआ।

चन्द्रोदय हुआ। चन्द्रमा ने अपनी किरण फैला दी। सुखद-चन्द्रिका छिटक गई। चाँदनी फैल गई। चन्द्र दर्शन हुए। कुमुदिनी वल्लभ की आभा प्रस्फुटित हुई। मन-कुरङ्ग को फँसाने के लिए शशि-किरण-जाल विस्तृत हुआ।

ज्ञान होगया।

ज्ञानोदय हुआ। अज्ञान दूर होगया। माया का परदा हट गया। मोह-तम टल गया। अज्ञानांधकार मिट गया। हृदय में प्रकाश हो गया। ज्ञान-रूपी-सूर्य्य की किरणों से अज्ञानांधकार विलीन हो गया।

पतित हो गया।

पथभ्रष्ट हो गया। उद्देश्य से गिर गया। लक्ष्य चूक गया। स्थिर न रह सका। अपने को सम्हाल न सका।

दिन काटता हूँ।

कालक्षेप करता हूँ। दिन व्यतीत करता हूँ। समय को धक्का देता हूँ। दिन काटना हूँ। दिन निकालता हूँ।

दुखी हुए।

शोकान्वित हुए। शोक-सागर उमड़ पड़ा। शोकाभिभूत हुए। शोक में मग्न हो गये। शोक में अधीर हो गये। शोकातुर हो गये। शोकाकुल हुए। शोक से हृदय अधीर हो गया। दुख का पारावार न रहा।

मर गया।

परलोक-वास हो गया। कैलास-वास हो गया। स्वर्ग सिधारे। पञ्चत्व प्राप्त किया। असार संसार को छोड़ दिया। यहाँ से चल बसे। इस से विदा ली। भव बंधन से छूट गये। संसार परित्याग किया। उनके प्राण पखेरू उड़ गये। जीवन-प्रदीप निर्वाण हुआ। [illegible] बदल हुए। मानव लीला समाप्त की। अमर लोक सिधारे आदि।

किसी से कहना है चले जाओ। अपने यहां [illegible] दिखाओ। हवा खाओ। काम देखो। रास्ता पकड़ो। रास्ता लो आदि।

'जमना' क्रिया-पद का व्यवहार साधारणतः द्रव वस्तु के ठोस रूप होने के अर्थ में आता है; जैसे:—पानी जम गया। परन्तु जब अन्य स्थान पर लाते हैं तो विशेष चमत्कार हो जाता है; "दूकान जम गई। हाथ जमा दूँगा। कैसा रंग जमा है। रौब नहीं जमा। मामला जमता नहीं नज़र आता। जड़ जमती जाती है। बड़ी भीड़ जमी। जूआ डट के जमा हुआ है"।

यह पत्नी उनको देने आई हैं।

यह पत्नी उनकी भेंट के लिये लाई हूँ, यह पत्नि-रत्न उनकी भेंट के लिये लाई हूँ। यह पत्नी उनके कर कमलों में समर्पण करने के लिये लाई हूँ। यह पत्नि-रत्न उनके चरण-कमल में अर्पण करने के लिये लाई हूँ।

वाक्य रचना का अभ्यास।

(६)

वाक्य का कोई पद अथवा अंश दिया हुआ हो तो वाक्य पूरा करना।

'स्वास्थ्य है'—उसका अच्छा 'स्वास्थ्य' है।

'परोपकार से'—मनुष्य की 'परोपकार से बड़ी कीर्ति फैलती है।

'धन्य है'—तुम्हारी करनी को धन्य है

पुल पर से —मैंने पुल पर से नगर को देखा।

गीति काव्य —मिश्र जी की गीति-काव्य अच्छी रचना है।

मानव-जीवन — मानव-जीवन पवित्र होना चाहिये।

भगवद्भक्ति — भगवद्भक्ति ही मनुष्य जीवन का सार है।

ज्ञान और भक्ति — ज्ञान और भक्ति दोनों कल्याणकारी हैं।

लिया जाता हो, उसे मुहाविरा कहते हैं। मुहाविरेदार भाषा वह भाषा है, जिसमें मुहाविरों का प्रयोग हो।

मुहाविरों का वाक्यों में प्रयोग।

मुहाविरा अर्थ उनका वाक्यों में प्रयोग।

हाथ धो बैठना = खो देना, वह पुस्तक से हाथ धो बैठा।

हाथ डालना = काम छेड़ना, इस काम में हाथ डालूँगा।

हाथ खींच लिया = सम्बन्ध नहीं रक्खा, मैंने उधर से हाथ खींच लिया।

हाथ उठाना = मारना, बच्चों पर हाथ उठाना अच्छा नहीं।

हाथ मारना = शर्त करना, हाथ मार कर कहे देता हूँ।

हाथ चलाना = छेड़ना, हाथ चलाना अच्छा नहीं।

हाथ होना = कृपा होना, उसके ऊपर राजा का हाथ है।

हाथ कटाना = काबू न रखना, वह अपने हाथ कटा बैठा।

हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना = कुछ न करना, वह हाथ पर हाथ रख कर बैठा है।

हाथ खाली होना = कुछ न रहना, मैं खाली हाथ आकर क्या करूँगा?

[illegible] = लेना उसने मेरी पुस्तक हथियाली।

[illegible] धो कर पीछे पड़ना = लगातार पीछे पड़ना, वह हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ा है।

हाथ दबा है = काबू है, मेरा हाथ दबा है

हाथ निकलना = काबू निकलना अब क्या है हाथ निकल गया।

हाथ मलना = पछताना, हाथ मल रहा है।

हाथ आना = मिलना तुम्हारे क्या हाथ आयेगा।

सिर मूड़ना = ठगना, किसका सिर मूड़ा।
सिर लेना = ज़िम्मेवारी लेना, उसे अपने सिर क्यों लेते हो।
सिर हिलाना = मना करना, उसने तो सिर हिला दिया।
सिर देना = बलिदान होना, धर्म पर उसने अपना सिर दे दिया।
सिर पर चढ़ाना = आदत बिगाड़ना, उसने सिर पर चढ़ा लिया है।
सिर पटकना = किसी दूसरे पर डालना, उसने मेरे सिर पटक दिया।
सिर डालना = बलात् सौंपना, राम के सिर डाल दी।
पानी उड़ना = आब बिगड़ना, तलवार का पानी उड़ गया।
पानी पड़ना = शर्म आना, लाखों मन पानी पड़ा।
पानी ढलना = बेशर्म होना, उसकी आँखों का पानी ढल गया।
पानी पी जाति पूछना = काम करके पीछे सोचना।
ख़ाक उड़ना = बरबाद होना, यहाँ ख़ाक उड़ती है।
ख़ाक उड़ाना = बदनामी करना, किसी की ख़ाक उड़ाना अच्छा नहीं।
ख़ाक डालना = छिपाना, जो हुआ सो हुआ अब ख़ाक डालो।
ख़ाक चाटना = तबाह होना, वह ख़ाक चाट गया।
ख़ाक छानना = बहुत ढूँढ़ना, तुम्हारे पीछे ख़ाक छान डाली।
ख़ाक में मिलना = नाश होना, वह ख़ाक में मिल गया।
ख़ाक बरसना = नाश होना, यहाँ ख़ाक बरसती है।
ख़ून सूखना = डरना, देखते ही मेरा ख़ून सूख गया।
ख़ून बिगड़ना = [illegible] ख़ून का [illegible] उसका ख़ून बिगड़ गया।
ख़ून बहाना = मारकाट करना, ख़ून बहा दूँगा।
ख़ून उबलना = क्रोध आना, उस पर ख़ून उबल पड़ा।
ख़ून का प्यासा = जान का ग्राहक, वह मेरे ख़ून का प्यासा है।

मुँह फिरना = घमण्ड होना, उसका मुँह फिर गया।
मुँह फटना = लोभी होना, आजकल उसका मुँह फटा है।
मुँह ही मुँह देना = जवाब पर जवाब देना, क्यों मुँह ही मुँह देते हो?
मुँह बनाना = चेष्टा विशेष करना, कैसा मुँह बनाया है।
मुँह बिगाड़ना = उलटा जवाब देना उसका मुँह बिगाड़ दिया।
मुँह फक्क होना = घबड़ाना, उसका मुँह फक्क हो गया।
मुँह में पानी भरना = इच्छा होना, देखते ही मुँह में पानी भर आया।
मुँह काला होना = कलंक लगना, उसका मुँह काला होगया।
मुँह माँगी मौत मिलना = चाही हुई बात पूरी होना, मुँह माँगी मौत नहीं मिलती।
आँख मारना = इशारा करना, उसकी ओर आँख मार दी।
आँख मटकाना = सैन चलाना, क्यों आँख मटकाता है?
आँख मूँदना = विचार न करना, आँख मूँद कर काम करता है।
आँख मिचना = मरना, उसकी आँख मिच गई।
आँख खुलना = समझ आना, बड़े दिनों में आँखें खुलीं।
आँख दिखाना = धमकाना, जब वह आँख दिखाने लगा।
आँख लगना = प्रेम होना, सोना। उससे आँख लग गई। उसकी आँख लग गई।
चार आँखें होना = सामने होना, ज्यों ही उनकी चार आँखें हुई।
आँख बदलना = मन फिरना, उसकी आँखें बदली दिखाई देती हैं।
आँखों में चर्बी छाना = घमण्ड होना, उसकी आँखों में चर्बी छागई है।
आँखें नीली पीली करना = नाराज़ होना, आँखें नीली पीली क्या करते हो।

आँख उठा कर देखना = सामना करना, उसकी तरफ़ कोई आँख भी नहीं उठा सकता।

आँखों में खून उतरना = क्रोध से आँखें लाल होना।

पानी का बुलबुला = क्षणभंगुर, यह जीवन पानी का बुलबुला है।

पानी के मोल = बहुत सस्ता, पानी के मोल बिक गया।

पानी चढ़ना = रंग आ जाना, सोने का पानी चढ़ा है।

पानी पानी होना = अत्यन्त लज्जित होना, लज्जा से पानी पानी होगया।

पानी पी पी कर = लगातार, पानी पी पी कर कोस रहा है।

पानी बुझाना = कोई गर्म वस्तु पानी में डालना, पानी बुझा कर पिलाओ।

पानी भरना = फीका पड़ना, उसके सामने पानी भरता है।

पानी मरना = कसूरवार साबित होना, उसकी तरफ़ पानी मरता है।

पानी में आग लगाना = असम्भव काम करना, पानी में आग लगाता है।

पानी भरी खाल = अनित्य जीवन, पानी भरी खाल है।

अभ्यास

(१) इन्हें लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो —

[illegible]

भर का बखेड़ा उठाना, दुनिया से उठ जाना, दुनिया भर का सामान लादना, दुहाई देना, दुहाई मारना, दुहाई फिरना, दिन काटना, दिन दहाड़े लूटना, सिर पर चढ़ कर नाचना, नाच नचाना, नाच कूद करना, नाच रंग होना, सिर पर मौत नाचना, तीन तेरह होना, तीन पाँच करना, छुट्टी पाना, छुट्टी होना, छुट्टी रहना, ढील डालना, ढील देना, ढील छोड़ना, शान किरकिरी होना, शान बघारना, शान मारना, शान पर चढ़ना, हवा बँधना, हवा उखड़ना, उलटी हवा चलना, हवा का रुख देखना, हवा खाना, हवा लगना, हवा चलना, हवा बदलना, हवा में उड़ना, हवाई महल बनवाना, साँस खींचना, साँस निकलना, साँस भरना, साँस लेना, गहरी बात, गहरी मार, गहरी चाल, गहरी चोट, टेढ़ी खीर, टेढ़ी बात, टेढ़ी चाल ।

(२) अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करोः—

'मूसलाधार पानी बरसता है' 'किंकर्तव्यविमूढ़ होगया' 'कुछ सूझता नहीं' 'रामों राम आगरे पहुँचा' 'तीन तेरह हो गया' 'तीन पाँच क्यों करते हो' 'पानी के बताशे हैं' 'हवाई महल हैं' 'अन्धाधुन्ध मच रही है' 'लेना एक न देना दो' 'ज्यों का त्यों रखा है' 'डाँवाँडोल हो गया' 'आँधी के आम हैं' 'सावन का अन्धा है' 'हरे में पूरी है' 'चकचक क्यों मचाई है' 'बकता हो' 'क्यों गुनगुना रहा है' 'साँप फुफकारता है' 'गाय रँभाती है' 'मोर कूकता है' 'कोयल कुहू कुहू करती है' 'कौआ काँव काँव कर रहा है' 'बकरी मैं मैं करती है' 'चोर गिड़गिड़ाता है' 'बादल गड़ रहा है' 'घटा छा रही है' 'कमल खिल रहा है' 'चाँदनी छिटक रही है' 'निस्तब्धता छा गई है' 'मनमानी कर रहा है' 'परिन्दा पर नहीं मार सकता' 'ऊपर का ऊपर नीचे का नीचा' 'चील झपट्टा मारती है' 'चिड़िया चहचहाती है' 'वह मार खा रहा है' 'टकटकी बँध गई' 'दिन दहाड़े लूट मच गई' 'पानी रुक रुक कर बरसने लगा' 'पसीने

पसीने हो गया' 'दिल की कली खिल गई' 'मन बाग़ बाग़ हो गया' 'पानी भरा बबूला है' 'पानी की आग है' 'पैंतरा बदल रहा है' 'तिउरी फट गई' 'तिउरी पलट गई' 'चाल न चल सका' 'बात पकड़ ली गई' 'रात का मामला है' 'ज़िन्दगी भारी पड़ गई' 'वे दिन न रहे' 'मान का पान ही अच्छा' 'आँखें फटी की फटी रह गई' 'मन-मयूर-मस्त हो गया' 'अन्ततोगत्वा' 'आख़िरकार'।

वाक्य-रचना का अभ्यास

(८)

अनुच्छेद-रचना

"वाक्य पदों का वह नियमबद्ध संगठन है—जिसमें एक पूरा विचार प्रकट करने की शक्ति हो।" ऐसा वाक्य-समूह जिसमें एक ही भाव प्रकट हो, अनुच्छेद कहलाता है, अर्थात् सापेक्ष वाक्य-समूह ही अनुच्छेद है। अनुच्छेद-रचना के समय एक वाक्य के ठीक पीछे ही दूसरा ऐसा वाक्य आता है जिससे विचारों का तारतम्य नष्ट न हो और जो कुछ हम कहना चाहते हैं उसका क्रम विकास होता जाय। जब तक वह पूरा भाव स्पष्ट न हो जाय जिसे हम व्यक्त करना चाहते हैं वाक्यों का सिलसिला बराबर चला जायगा। अनुच्छेद के वाक्यों में आकांक्षा योग्यता और क्रम रहता है इसलिये नीचे कुछ पद समूहों पर अनुच्छेद रचना करके दिखाते हैं :—

सज्ञा पद :

१ समय, महत्त्व इसलिये पवित्र प्रेम, पाबन्द बन

संसार में उसी को दुःख होता है जो सदाचार का पालन नहीं करता। सदाचार से शरीर की शक्तियों को बल मिलता है, मन निर्मल होता है, हृदय पवित्र होता है। लोग परमात्मा परमात्मा पुकारते हैं परन्तु, जिनके शरीर और मन शुद्ध नहीं है वह परमात्मा से प्रेम नहीं कर सकते। परमात्मा के प्रेम का साधन ही सदाचार है।

(२) जल, वायु, भोजन, श्वाँस जीवन (जिन्दगी), प्राण।

मनुष्य-जीवन के लिये जल, वायु और भोजन की आवश्यकता है। वायु के बिना श्वाँस नहीं ले सकते। थोड़ी देर भी श्वाँस क्रिया को रोक लें तो प्राण छटपटा ने लगते हैं। जल का तो नाम ही जीवन है। और बिना भोजन के मनुष्य कुछ दिन तक जी सकता है पर दिन पर दिन निर्बल होता जाता है।

अभ्यास

नीचे लिखे हुए प्रत्येक पद-समूह को अलग अलग अनुच्छेदों में लिखो :

१—शकुन्तला कालिदास, रचना, अनुपम, संसार, कवि-कुल-मुकुट, [illegible]।

२—विनय मनुष्यता शिष्टाचार, जीवन पवित्र।

३—वर्तमान [illegible] स्थान, अनुपम दृश्य विशाल [illegible], [illegible] [illegible]।

४—[illegible]

५—अशोकवाटिका सीता, हनुमान लंका [illegible]।

मैं सोनपुर के मेले में जो पुस्तकें ले गया था हाथों-हाथ निकल गयीं। फिर दिन भर इधर उधर घूमता रहा अचानक स्वामी दयानन्द जी के दर्शन होगये। उन्होंने कहा "जब कभी इधर आओ मिल तो लिया करो।" मैंने कहा "क्षमा कीजिए, मेला देखकर सायंकाल को आपके दर्शन अवश्य करता।"

(२) एकाएक, अकस्मात, कदाचित, बहुधा, व्यर्थ, दिनभर।

मैं कल एकाएक मथुरा पहुँच गया। अकस्मात् चौधरी कृष्ण गोपाल मिल गये। कदाचित श्रावणी तक वहीं ठहरे रहें। बहुधा ऐसा ही किया करते हैं। मैंने आगरे आने के लिये कहा किन्तु व्यर्थ हुआ। उनके पास दिन भर ठहर कर वहाँ से चला आया।

अभ्यास

नीचे लिखे क्रिया विशेषण समूहों पर अनुच्छेद-रचना करो :—

१—शान्ति पूर्वक, प्रतिदिन, कथनानुसार, सर्वथा।

२—निरन्तर, परस्पर, स्वभावतः, नाममात्र, नियमानुसार।

३—इसलिये, अचानक, सहज, मुख्य करके, क्रमानुसार।

४—निदान, दौड़ते दौड़ते, जहाँ तक, लगातार, कदापि।

वाक्य—रचना का अभ्यास

(९)

मुहाविरों पर अनुच्छेद रचना

१—रात ढलना, सन्नाटा छा जाना, हाथों हाथ, मालमता, नौ दो ग्यारह।

रात ढल चुकी थी सन्नाटा छाया हुआ था हाथों हाथ कुछ दिखाई नहीं देता था चुपके से चोर आया और माल मालमता लेकर नौ दो ग्यारह हुआ।

वाक्य रचना का अभ्यास

(१०)

कहावतों का प्रयोग

कहावतें ऐसे मुहाविरेदार वाक्य (उक्तियाँ) हैं जो एक स्वतन्त्र अर्थ रखती हैं और मनुष्य अपने कथन की पुष्टि में अथवा अपने पक्ष में फ़ैसला लेने के अभिप्राय से, अथवा किसी बात को किसी आड़ से कहना हो उस समय, अथवा किसी के प्रति उपालम्भ देना हो, अथवा जब किसी को चेतावनी देनी हो, तो उनका प्रयोग किया करते हैं। उन्हें 'कहावत' या 'लोकोक्ति' अथवा 'जन-श्रुति' कहते हैं।

उलटा काम करने वाले को अच्छा फल न मिले तो वहाँ स्पष्ट यह कह कर "तुमने बुरा किया अतः बुरा हुआ" एक लोकोक्ति कह दी 'जैसी करनी वैसी भरनी" अवसर निकल जाने के बाद सम्हलने वाले से "अब पछताये होत का चिड़ियाँ चुग गईं खेत।" "का बरसा जब कृषी सुखाने।" आदि।

इस प्रकार सहस्रों कहावतें जनता में कही और सुनी जाती हैं। उन कहावतों का भावार्थ समझ कर वाक्यों में प्रयोग करने से वाक्य-रचना का अच्छा अभ्यास होता है।

जब पृथक् २ कहावतों का प्रयोग करते हैं तो सापेक्ष वाक्य समूह का कहावत पर निचोड़ होता है, जैसे :—

देखिये ऊँट किस करवट बैठता है।

अभी परिणाम निश्चित नहीं हुआ। उद्योग तो खूब किया पर ठीक नहीं कह सकता कि ऊंट किस करवट बैठे।'

एक का इलाज दो और दो का इलाज चार।

भाई कल रात को एक दुर्घटना हो गई। जब मैं घर आ रहा था दो चोरों ने घेर लिया। यद्यपि मैंने बहुत साहस

किया, तथापि आप जानते ही हैं कि "एक का इलाज दो और दो का चार।" यह कपड़े लत्ते लेकर लम्बे बने।

साँईं घोड़नि के अछत गदहन आयो राज।

यहाँ तजुरुबेकार पुराने लोगों को कोई पूछता ही नहीं बेचारे सच्चे सीधे एक कोने में पड़े हैं। परन्तु कुछ चालबाज़ लोगों ने अपना ऐसा गुट्ट बनाया है कि उनके सामने किसी की नहीं चलती। यह दशा देख कर हमें यह मसल याद आती है "साँईं घोड़नि के अछत गदहन आयो राज।"

फरा सो झरा और बरा सो बुताना।

जो आर्य्य-जाति किसी समय सभ्यता के शिखर पर चढ़ी थी, जो एकता और प्रेम के मद में मस्त थी; आज वही अज्ञान, द्वेष, कलह और फूट का शिकार बन रही है। सदैव एक सी दशा किसी की नहीं रहती। यह ईश्वरीय नियम है, "फरा सो झरा और बरा सो बुताना।"

अपनी अपनी ढापुली अपना अपना राग।

अविद्या के अँधेरे ने एकता-सूत्र को तोड़ मोड़ डाला। वह हिन्दू जाति अनेक सम्प्रदाय और अनेक वर्गों में बट कर अलग अलग हो गई कोई किसी की बात नहीं मानता है, "अपनी अपनी ढापुली अपना अपना राग" वाली बात हो रही है।

हाथी चले ही जाते हैं कुत्ता भूँकते ही रहते हैं

संसार में सदैव बुराई भलाई होती है परन्तु बुद्धिमान पुरुष मूर्खों की बात पर कभी ध्यान नहीं देते वह अपने मार्ग से तिल भर भी नहीं हटते वह जानते हैं कि हाथी चले ही जाते हैं और कुत्ते भूँकते ही रहते हैं

बड़े लोगों के कान होते हैं, आँख नहीं।

हमारे देश में बड़े लोग लड़कपन से ही कुछ खुशामदी लोगों के हाथ के खिलौने बन जाते हैं। यही चमचे उनके विचारों और व्यवहारों के विधाता बन बैठते हैं। जो कुछ इन्होंने कह दिया, जो कुछ समझा दिया वह बेपेंदी के लोटे की तरह इधर उधर लुढ़कते फिरे। तभी तो कहते हैं 'बड़े लोगों के आँखें नहीं होतीं, कान होते हैं।"

एकार्थक अनेक कहावतों को अब एक अनुच्छेद में प्रयोग करते हैं तो किसी मुख्य भाव की पुष्टि होती।
नीति सम्बन्धी कहावतें—

मनुष्य स्वार्थ-वश हो कर नीच से नीच कर्म करने पर उतारू हो जाता है। स्वार्थ भरी संकीर्ण दृष्टि से संसार के सारे कामों को देखता है। उसके हृदय में औचित्य-अनौचित्य के भेदों के लिये कोई भी स्थान नहीं रह जाता। उसे तो आम की खाने से काम उसके पेड़ों से क्या काम ? संसार में "मुख्य है आम रोटी और सभी बात खोटी" होने के कारण "मतलब से मतलब" है। न किसी के अगाड़ी पर चलना है न किसी के पिछाड़ी पर चलें। उसके द्वारा "आठ गाँव का चौधरी बहत्तर गाँव का राव अपने काम न आवे तो भाड़ में जाओ" [illegible] यह [illegible] मनुष्य सोचा है कि [illegible] 'बिन स्वारथ [illegible]' [illegible] [illegible] "यह मीठे के [illegible] [illegible]

*"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] मानुष भूल ॥"*

पनि रहीम वाले दोहे का यह तात्पर्य है कि "हर एक शक्तिशाली के वैभव से दूसरों का हित होना चाहिये।"

व्याख्या—विस्तृत अर्थ, जिसमें पूर्वापर प्रसंग की सम्पूर्ण बातों का उल्लेख तथा वाक्यान्तर्गत रहस्य का पूर्ण विवेचन रहता है। योग्यता के अनुसार व्याख्या कई प्रकार से की जा सकती है।

वाक्य—"आज जो समाज सुखी और समृद्धशाली बना है, सम्भव है कल उसे औरों की जूतियाँ उठानी पड़ें। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है।"

व्याख्या—"इतिहास में ऐसी सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं जिन से सिद्ध होता है कि हमेशा एकसी दशा किसी की नहीं रहती है। यदि इस समय कोई देश, जाति या समाज धन और सुख से पूर्ण अर्थात् स्वतन्त्र हो, तो यह निश्चय नहीं है कि हमेशा वह स्वतन्त्र ही बना रहे—मुमकिन है कल दूसरी जातियों का गुलाम बनना पड़े, अर्थात् अच्छी अवस्था में कभी किसी को स्वार्थी और पागल न होजाना चाहिये।"

अभ्यास

१—नीचे लिखे वाक्यों का तात्पर्य, भावार्थ और व्याख्या लिखो

१—"साहिब के दरबार में कमी वस्तु की नाहिं।
बन्दा मौज न पावही चूक चाकरी माहिं॥"

२—"जे न मित्र-दुख होहिं [illegible] तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।"

३—[illegible]

[illegible]

[illegible] नहीं। मनुष्य का [illegible]

[illegible], सहायक बना है, [illegible]

चतुर्थ अध्याय

रचना के लिये ज्ञातव्य बातें

(१)

काव्य, रस, गुण, दोष, रीति, छन्द और गद्य-भाषा

रसात्मक वाक्य का नाम 'काव्य' है। जिस रचना के पढ़ने से पाठक के हृदय में एक अनिर्वचनीय आनन्द का उदय हो उसका नाम 'काव्य' है। जिस व्यक्ति को आधार मानकर किसी काव्य की रचना की जाती है, वह उस काव्य का 'नायक' कहलाता है और नायक का प्रतिद्वन्द्वी प्रतिनायक; जैसेः—रामायण में राम नायक और रावण प्रतिनायक हैं। नायक और प्रतिनायक के सिवाय गौणरूप से अन्य पुरुषों का वर्णन भी रहता है।

काव्य के दो भेद हैं:—श्रव्य और दृश्य। पढ़ने और सुनने योग्य काव्य 'श्रव्य' कहलाता है, जैसेः—रामायण। और जिसका अभिनय किया जा सके वह 'दृश्य' काव्य है, जैसे :—नाटक, प्रहसन आदि। श्रव्य काव्य के दो भेद हैं महाकाव्य और खण्डकाव्य।

महाकाव्य—किसी देवता या प्रसिद्ध पुरुष के चरित्र के आधार पर की हुई [illegible] रस और भाषा की [illegible] [illegible] प्रिय प्रवास आदि।

खण्डकाव्य—जिसमें [illegible] बातें या अंशों का [illegible] कहते हैं, जैसे — जयद्रथवध।

रस

किसी वर्णन को सुनकर या पढ़कर अथवा नाटकादि का अभिनय देखकर हृदय में जो एक स्थायी और अपूर्व भाव पैदा होता है उसे 'रस' कहते हैं। रस नौ प्रकार के होते हैं :—

(१) श्रृङ्गार—नायक-नायिका के अनुराग-विषयक भाव के नाम को श्रृङ्गार कहते हैं।

(२) वीर—दया, धर्म, दान, देशभक्ति और संग्राम में उत्साह-विषयक भाव के वर्णन में वीर रस होता है।

(३) करुण—प्रिय वस्तु के वियोग और अप्रिय वस्तु के संयोग में जो शोक होता है, उसे करुण कहते हैं।

(४) अद्भुत—आश्चर्यजनक विषय को देख कर, सुन कर, पढ़ कर जो आश्चर्य का भाव उत्पन्न हो उसे अद्भुत रस कहते हैं।

(५) रौद्र—क्रोध उत्पन्न करने वाले को रौद्र रस कहते हैं।

(६) भयानक—जिससे मन में भय हो उसे भयानक रस कहते हैं।

(७) वीभत्स—जिसके द्वारा मन में घृणा उत्पन्न हो, वह वीभत्स रस है।

(८) हास्य—हँसी का भाव जहाँ पैदा हो वहाँ हास्य रस होता है।

(९) शान्त—तत्त्व-ज्ञान आदि से मन में जहाँ शान्ति उत्पन्न हो वहाँ शान्त रस होता है।

सरस रचना में इन्हीं रसों में से एक या कई रस होते हैं

गुण

रस को बढ़ाने वाले धर्म को 'गुण' कहते हैं। गुण के तीन भेद हैं :—माधुर्य्य, ओज और प्रसाद।

माधुर्य्य—जिस रचना को सुनकर चित्त द्रवीभूत हो जाय उसे 'माधुर्य्य गुण' कहते हैं।

ओज—जिस रचना से चित्त में उत्तेजना, वीरता और साहस बढ़े वहाँ 'ओज गुण' होता है।

प्रसाद जिस रचना को सुनते ही उसके अर्थ का भाव हो जाय वहाँ 'प्रसाद गुण' होता है।

रीति

रचना के लिये पद-योजना करने की पद्धति को रीति या शैली कहते हैं। भिन्न भिन्न लेखकों की भिन्न भिन्न शैली है। इसी लेखन-शैली के उत्कर्ष के अनुसार रचना की सुन्दरता बढ़ती है। उत्कर्ष-शैली के लिये स्पष्टता, माधुर्य्य, पद-प्रयोग की सार्थकता, चित्ताकर्षकता, भाषा-वैचित्र्य और भाव-प्रतिफलन का ध्यान रखना चाहिये।

(१ स्पष्टता—रचना के पढ़ने से अर्थ बोध में कठिनता न हो। स्पष्टता को गुण विशेष कह सकते हैं। बिना स्पष्टता के रचना के अन्य गुण व्यर्थ हो जाते हैं। लेख के भावों को सरलतापूर्वक पाठक समझ सकें इसका ध्यान रखना परम आवश्यक है। रचना-गौरव के लिये कभी कभी लेखक इस प्रकार पद-विन्यास करते हैं जिससे यह नहीं समझ सकते कि किस पद का सम्बन्ध किससे है। कोई कोई कठिन और अप्रचलित शब्दों का प्रयोग करते हैं। अनेक लेखक थोड़े से शब्दों में व्यक्त होने वाले भाव को बड़े बड़े वाक्यों में प्रकट

जहाँ दुःख और शोक प्रकाशित करे, पढ़ते ही पाठक भी उसे अनुभव करने लगें। किसी विषय को पढ़ कर, देख कर या सुन कर, पाठक, दर्शक और श्रोता के मन में उस अनुभव के कारण एक अनिर्वचनीय विकार उत्पन्न हो उसे 'भाव' कहते हैं। रचना विशेष के पढ़ने आदि से उत्साह, शोक, विस्मय, क्रोध भय, स्नेह, हास्य, घृणा और विरति उत्पन्न होती है। पाठकों के मन को उसका पूरा अनुभव करा देना ही रचना की प्रशंसा है। सुलेखक को पद-विन्यास का गौरव भली प्रकार जान लेना चाहिये।

सुकुमारता—भाषा का एक गुण और है। लालित्य-विहीन होने पर सारयुक्त भाषा भी पाठकों का चित्ताकर्षण नहीं कर सकती। भाषा की रीति का हर एक लेखक को ध्यान रखना चाहिये। कर्कश शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिये, इससे 'श्रुति-कटु' दोष पैदा होता है और भाषा की कोमलता नष्ट हो जाती है। नीचे दर्जे की भाषा में ग्राम्य दोष होने से श्रुति-मधुरता नहीं होती। अर्थागम में सन्देह, अप्रसिद्ध, अर्थ में अनेक अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किसी अर्थ वाले शब्द का दूसरे अर्थ में प्रयोग, कष्टार्थक कल्पना, अनावश्यक पद प्रयोग और आवश्यक पदों के अभाव का ध्यान रखना चाहिये। परस्पर अपेक्षा रखने वाले पदों अथवा वाक्यों की अर्थ-समता पर ध्यान रखना चाहिये। कभी भी एक वाक्य को हठात् दूसरे वाक्य के भीतर लाने की चेष्टा न करनी चाहिये। अव्यय पदों के ठीक ठीक प्रयोग में भाषा का सौंदर्य बढ़ता है।

भाषा वैचित्र्य—भाषा का एक विशेष गुण है। वर्णित विषय को ऐसे सुन्दर भावों से सजाना चाहिये जिससे उसका सौंदर्य और आकार स्पष्ट दीखने लगे। साधारण भाव वाले पदों से

विन्यास में यह स्पष्टता नहीं होती। अर्थालंकार और दृष्टान्तों से विषय का सौन्दर्य्य और आकार प्रत्यक्ष होता है। भाषा में जितना वैचित्र्य होगा, भाव में सौंदर्य्य का उतना ही उदय होगा। 'वाक्य के रूपान्तर' प्रकरण में भाषा-वैचित्र्य के कुछ उदाहरण दिखा चुके हैं।

भाव-प्रतिफलन—जिस प्रकार सूखे काठ में अग्नि शीघ्र प्रवेश करती है उसी प्रकार भाषा में कहे हुए भाव भी शीघ्र प्रतिफलित हों, अर्थात् पढ़ते ही भाव-समूह पाठकों के चित्त में व्याप्त हो जावें। 'परोपकार', जन-साधारण में ज्ञान की वृद्धि और 'मन का विकास', यही रचना के मुख्य उद्देश्य हैं।

छन्द

वह वाक्य जिसमें वर्ण वा मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो 'छन्द' कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है:—वर्णिक और मात्रिक। जिस छन्द के प्रतिचरण में अक्षर की संख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम होता है वह 'वर्णिक' वा 'वर्णवृत्त' और जिनमें अक्षरों की गणना और लघु-गुरु के क्रम का विचार नहीं, केवल मात्राओं की संख्या का विचार होता है वह 'मात्रिक' छन्द कहलाता है; गीता, रूपमाला, दोहा, चौपाई इत्यादि मात्रिक छन्द हैं, वंशस्थ इंद्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, मालिनी, मन्दाक्रान्ता इत्यादि वर्णवृत्त हैं।

गद्य

वह लेख जिस में मात्रा और वर्णों की संख्या और स्थान आदि का कोई नियम न हो और जिसमें कर्त्ता और क्रियादि पद यथा स्थानों पर स्थित हों।

काव्य के दो भेदों में से एक भेद 'गद्य-काव्य' होता है जिसमें छन्द और वृत्त का प्रतिबन्ध नहीं होता और बाकी रस अलङ्कार आदि सब गुण होते हैं।

अग्निपुराण में गद्य-काव्य तीन प्रकार का माना गया है चूर्णक, उत्कलिका और वृत्तगन्धि।

चूर्णक—वह है जिसमें छोटे छोटे समास हों।

उत्कलिका—वह है जिस में बड़े बड़े समस्त-पद हों।

वृत्तगन्धि-वह है जिसमें कहीं कहीं पद्य का सा आभास हो।

जैसे :—हे वनवारी कुञ्जविहारी, कृष्णमुरारी, यशोदानन्दन, हमारी विनती सुनो।

रचना के लिये ज्ञातव्य बातें

(२)

प्रबन्ध लिखते समय उसके 'सौंदर्य-विधान' और 'दोष-हीनता' पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। अपने विषय से बाहर नहीं जाना चाहिये। भाव-पूर्ण वाक्य में प्रबन्ध लिखने की चेष्टा करनी चाहिये। भाषा की सजीवता और भावों की [illegible] रखना चाहिये।

प्रबन्धों को दोष-रहित बनाने के लिये नीचे की कुछ बातों को ध्यान में रखना चाहिये।

१—अप्रयुक्त पद और कुप्रयोगों का त्याग।

२—अश्लील और अप्रचलित पदों से बचाव।

३—अत्यन्त नीच, ग्राम्य अथवा प्रान्तीय भाषा के व्यवहारों से बचाव।

४—विदेशी भाषाओं के सहज प्रचलित तथा अत्यन्त आवश्यक पदों के सिवाय अनावश्यक शब्दों की भरमार से बचाव।

५—इसलिये 'जो कि' आदि अव्ययपदों का बारम्बार प्रयोग न करना चाहिये।

६—वर्णनीय विषय के लाघव और गौरव के विचार से वाक्य में छोटे-बड़े पद लाना चाहिये।

७—लम्बे लम्बे समासों के प्रयोग से बचना चाहिये।

८—एक ही भाव को बार बार नहीं दुहराना चाहिये।

९—भाव-प्रकाशन में उपयुक्त पदों का व्यवहार करना चाहिये।

१०—पद-स्थापन-प्रणाली पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिये।

११—बहुत सी समापिका क्रियाओं द्वारा अधिक वाक्यों को न जोड़ना चाहिये।

१२—दो वाक्यों के जोड़ने के स्थान में एक अत्यन्त दीर्घ और दूसरा अत्यन्त छोटा न होना चाहिये।

१३—तत्सम और तद्भव शब्दों का परस्पर समास नहीं होना चाहिये

१४—विषाद विस्मय क्रोध हर्ष शोक, निश्चय प्रमाद और ढूँढना आदि अर्थ वाले पदों को दुहराने से पुनरुक्ति दोष नहीं होता

१५—अनुप्रास, यमक आदि शब्दालंकारों की भरमार से रचना को जटिल नहीं बनाना चाहिये।

१६—अनेक सम-कारक पद एक वाक्य में आवें तो अन्तिम पद के पूर्व संयोजक या वियोजक अव्यय लाना चाहिये और प्रथम को छोड़कर शेष पदों के पूर्व अल्प-विराम।
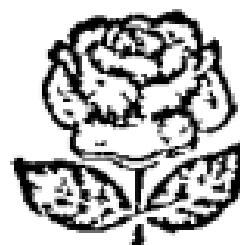
पञ्चम अध्याय

पत्र-लेखन

(२)

पत्र-लेखन रचना का मुख्य अङ्ग है। लेख, नियन्ध और पुस्तकादि लिखने वालों की संख्या तो परिमित होती है किन्तु प्रायः पत्र लिखने लिखाने का काम तो समाज के हर एक सदस्य को पड़ता ही है। गार्हस्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक ऐसी अनेक आवश्यकताएँ होती हैं जिनके लिये हमें दूरस्थ मित्रों, सम्यन्धियों, सम्पादकों, शासकों तथा आत्मीय जनों को पत्र लिखना पड़ता है अथवा उनके पत्रों का उत्तर देना पड़ता है। पत्रों में कामकाजी साधारण यातों से लेकर यड़े यड़े ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक और नैतिक विषयों का उल्लेख करना पड़ता है। उच्च श्रेणी के पत्र योग्य लेखक ही लिख सकते हैं, उन्हें नियन्ध-रचना के सम्पूर्ण नियमों की जानकारी आवश्यक है। किन्तु साधारण योग्यता तो हर एक अक्षराभ्यासी के लिये अपेक्षित है, इसलिये मुख्य मुख्य यातें नीचे लिखी जाती हैं।

पत्र लिखते समय दो प्रकार की यातों पर ध्यान देना चाहिये :—

१—पत्र-सम्बन्धी सभ्यता अर्थात् शिष्टाचार।

२—मुख्य विषय।

शिष्टाचार

१—शिष्टाचार के लिये यह देखना चाहिये कि हम जिनको पत्र लिख रहे हैं वह पूज्य मान्य आत्मीय, सम्बन्धी या परिचित है। प्रचलित नियम के अनुसार उसके लिये वैसी ही प्रशस्ति (सरनामा) लिखना चाहिये।

२—हिन्दी में प्रचलित प्रणाली के दो भेद हैं, प्राचीन और नवीन।

पुराने ढंग के व्यापारी, ज़मींदार, पंडित तथा अन्य लोग अब भी पुरानी प्रथा के अनुसार पत्र लिखते हैं और नये विचार के लोग-नये ढंग से शिक्षा पाये हुए अथवा उनसे सम्पर्क रखने वाले लोग-नवीन परिपाटी से पत्र लिखते हैं।

नवीन परिपाटी में व्यर्थ की बहुत सी बातें न लिख कर मुख्य मुख्य बातों को संक्षेप में लिख देते हैं। आजकल इसी का अधिक प्रचार हो गया है और होता जा रहा है।

पुरानी प्रथा के सरनामे इस प्रकार के होते हैं:—

सबसे प्रथम किसी देवता या ईश्वर को नमः लिखते हैं, जैसे:—श्रीकृष्णायनमः, रामायनमः। बड़ों को सिद्धश्री सरब उपमा विराजमान सकलगुण निधान श्री [illegible] शुभस्थान [illegible] योग्य लिखी [illegible] की नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत, (आदि प्रणाम वाची शब्द

नाम से पहले पदवी अवस्था योग्यता अथवा केवल सम्मान के लिये 'विद्यानिधि' 'वयोवृद्ध,' 'विद्वद्वृन्द-शिरोमणि', 'परम प्रतापान्वित' आदि एक या कई विशेषण और जोड़ देते हैं।

पुरानी प्रथा में नाम के साथ श्री श्री श्री लिखने की भी प्रथा है। पृथक पृथक् न लिख कर एक बार 'श्री' लिखकर उसके आगे जितनी श्री लिखनी होती हो उतने का अङ्क दिया देते हैं, जैसे श्री ५।

श्री लिखने का नियम यह है गुरु को ६, [illegible] को [illegible] शत्रु को ८ मित्र और [illegible] स्वामी को [illegible] सेवक को २, और [illegible] को [illegible]

अब पुराने पत्र का [illegible] [illegible] कृपा से, [illegible] [illegible] श्री गंगा जी

की कृपा से 'यहाँ कुशल है' ... 'आपकी कुशल सदैव चाहते हैं' ...लिखकर 'आगे समाचार यह है', अथवा 'समाचार एक देवता जी' अन्त में 'पत्र शीघ्र भेजिये', 'उत्तर शीघ्र दीजिये' तथा शुभंभूयात्, शुभमस्तु, इति शुभम् और तिथि।

छोटों और बराबर वालों को 'सिद्ध श्री' की जगह 'स्वस्ति श्री' तथा प्रणाम की जगह 'आशीर्वाद', 'असीस', 'ॐ रामजी की' 'जै श्री कृष्ण जी की' 'ॐ गंगा जी की' तथा 'राम राम' आदि लिखते हैं।

नवीन प्रथा में देवता अथवा ईश्वर के प्रणाम के पीछे पत्र लिखने के कागज़ की दाईं ओर कोने पर वह स्थान लिखते हैं जहाँ से पत्र लिखा जाता है फिर उसके ठीक नीचे तिथि व तारीख।

बड़ों को—'पूज्यपाद' 'पूज्यवरेषु', 'महामहिम', 'मान्यवर', 'महामान्यवर', 'श्रद्धास्पद' 'श्रीचरणेषु', आदि में लिखकर अन्त में 'कृपाकांक्षी', 'दर्शकी', 'नम्र', 'स्नेह-भाजन', 'दास', 'सेवक', 'कृपाभिलाषी', आदि लिख कर अपना नाम लिख देते हैं।

बराबर वालों को 'मित्रवर', 'प्रियमित्र', 'प्रियबंधु', 'प्रियवर स्नेही जी', 'मित्रवर विद्यार्थी जी', 'मित्रवर वर्मा जी' आदि उपनाम को साथ में लिख देते हैं कोई कोई नाम को 'मित्रवर सत्यव्रत जी' लिख देते हैं।

नीचे आपका 'स्नेही' 'मित्र' या केवल 'आपका' या 'भवदीय' लिख कर अपना नाम लिख देते हैं।

छोटों को—'चिरंजीव' 'आयुष्मान्', 'स्नेहास्पद', आदि लिखकर अन्त में 'शुभैषी' 'शुभचिन्तक' आदि शब्द लिखते हैं।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आनन्द हुआ"। "पत्र पढ़ते ही आँखों से आनन्दाश्रुओं की धारा बह निकली।" यदि कोई आश्चर्य की बात हो 'पत्र पढ़ते ही दंग रह गया। आश्चर्य का पारावार न रहा।' और यदि कुछ चिन्ताजनक या दुःखद बात हुई तो 'पत्र पढ़ कर बड़ी चिन्ता हुई।' 'दुःख का पारावार न रहा।' 'बहुत दुःख हुआ' आदि लिख कर पत्र के विषय से वाक्य-रचना को मिला देते हैं।

पत्र स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों में लिखना चाहिये।

पता लिखना

पता-लिखना' पत्र-लेखन-कला का मुख्य अङ्ग है। यों तो कुल पत्र ही स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों में लिखना चाहिये; परन्तु पता लिखने में बड़ी सावधानी रखनी चाहिये। पत्र लिख कर लिफ़ाफ़े में बन्द कर देते हैं और लिफ़ाफ़े के ऊपर स्पष्ट अक्षरों में ठीक रीति से पता लिखते हैं। पुराने ढंग के लोग पत्र के ऊपर भी बहुत बड़ा सरनामा लिख देते हैं। नाम के साथ पदवी आदि के अतिरिक्त और कुछ न लिखना चाहिये। नाम के नीचे स्थान लिखो। यदि पत्र डाक से भेजना है तो ज़िला और डाकख़ाना भी होना आवश्यक है यदि कार्ड पर खुला हुआ पत्र हो तो उसके पीछे पता लिखना चाहिये।

श्रीयुत पं० रामजीलाल शर्मा
हिन्दी प्रेस, प्रयाग।
प्रयाग।

टिकट

श्रीयुत पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी
साहित्य कार्यालय
दारागञ्ज प्रयाग।

टिकट

मुख्य विषय

१—पत्र लिखने से पूर्व सोचना चाहिये कि हमें क्यों पत्र लिखना है। पत्र में जितनी बातें लिखनी हैं उनका संकेत एक काग़ज़ पर लिख लो।

२—यदि दूसरे के पत्र का उत्तर देना है तो देखो वह क्या क्या बातें आपसे जानना चाहता है अथवा उसकी बिना इच्छा के क्या क्या बता देना चाहते हो। यह सब संकेत काग़ज़ पर लिखलो।

३—हर एक संकेत के भाव को सापेक्ष वाक्यों में लिखकर पूरा करो।

४—हर बात को क्रमबद्ध लिखो। एक बात पूरी न करलो तब तक दूसरी प्रारंभ न करो। जो लोग बिना संकेतों के एक-दम लिखना प्रारंभ कर देते हैं—कोई बात ज़रा सी कहली, झट दूसरी शुरू करदी: वह भी पूरी नहीं हो पाती कि पहिली बात का एक और अंग याद आया—लिखने लगे। ऐसा करने से अपने मन की बात ठीक ठीक दूसरे के पास नहीं पहुँचा सकते हैं और पत्र पढ़ने वाला बड़ी अड़चन में पड़ जाता है।

५—पत्र की भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिये। यथाशक्ति अपने भाव को सरल वाक्यों में क्रमबद्ध प्रकाशित करते जाओ।

६—पत्र लिखते समय सोचलो कि जिसको तुम पत्र लिख रहे हो वह सामने उपस्थित है और तुम उससे बातें करते जा रहे हो। ऐसा करने से तुम्हारी भाषा और मन में स्वाभाविकता रहेगी

७—पत्र समाप्त करने के पहले अपने संकेतों और पत्र को मिला लो। यदि कोई आवश्यक बात छूट गई हो तो उसे पूरा करलो। फिर उचित शब्दों के साथ उसे समाप्त करो

८—पत्र [illegible]
[illegible]
[illegible] है

अभ्यास

१—अपने भाई को एक पत्र लिखो जिसमें तुमने कोई मेला देखा हो उसका वर्णन हो।

२—अपने मित्र को एक पत्र लिखो जिसमें किसी विवाह में तुम्हारे सम्मिलित होने की चर्चा हो।

३—अखबार के सम्पादक को एक पत्र लिखो जिसमें आपके शहर का कोई समाचार छपने के लिये हो।

४—अपनी माँ को एक पत्र लिखो जिसमें बोर्डिंग में तुम्हारे रहन-सहन का वर्णन हो।

५—अपने पिता को एक पत्र लिखो जिसमें परीक्षा में पास हो जाने की चर्चा हो।

६—अपने किसी साथी को एक पत्र लिखो जिसमें बालचर (बाय-स्काउट्स) दल में सम्मिलित होने की उत्तेजना हो।

७—अपनी छोटी बहिन को 'पाक विद्या' नामक पुस्तक भेजी जाय, उसके साथ जो पत्र भेजोगे उसका विषय लिखो।

८—नीचे लिखे आशय वाले पत्रों का उत्तर लिखो—

(१) किसी विवाह में सम्मिलित न होने की शिकायत आई हो।

(२) किसी की पढ़ने को माँगी हुई पुस्तक को ठीक समय पर न देने की शिकायत हो।

(३) उधार लिये रुपये भेजने के साथ चिट्ठी का नमूना।

(४) हैडमास्टर के पूछने पर स्कूल से अनुपस्थित रहने का कारण।

षष्टम अध्याय

प्रबन्ध-रचना का प्रारम्भिक अभ्यास

किसी भाषा के व्याकरण और मुहाविरे के अनुसार पद-योजना या वाक्ययोजना को 'रचना' कहते हैं। और जब किसी मुख्य विषय को लेकर इन अनेक वाक्य और अनुच्छेदों (पैराग्राफ़) द्वारा रचना करते हैं तो उसे 'प्रबन्ध-रचना' कहते हैं। यह रचना दो प्रकार से होती है एक वक्तृता द्वारा दूसरी लेख द्वारा। इस पुस्तक में केवल 'लेखनी-बद्ध रचना' पर ही विचार किया जाता है।

पिछले कई अध्यायों में रचना सम्बन्धी आनुषंगिक विषयों का वर्णन है। धीरे २ रचना का अभ्यास करके अन्त में कोई मनुष्य ऐसा लेखक बन जाय जो रचना-शास्त्र के नियमों के अनुसार पत्र, कहानी, लेख, पुस्तक आदि लिखने में पूर्ण सफलता प्राप्त करे। जब लेखक अपने कार्य्य में कुशल हो जाता है तो उसे किसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं, किन्तु कुशलता प्राप्त करने के लिये ही उसे पूर्ण अभ्यास की आवश्यकता है। तभी वह अच्छे निबन्ध आदि लिख सकेगा। प्रबन्ध-रचना के लिये कहानियों तथा पाठों का सार और स्वतन्त्र कहानियाँ लिखने का अभ्यास होना चाहिये।

पाठों और कहानियों का सार

पाठ्य पुस्तकों के पाठों व कहानियों का सार स्वतन्त्र रूप से लिखने से निबन्ध-रचना का अच्छा अभ्यास होता है। पहले पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस का संक्षेप-रूप लिख लेना चाहिये और उस संक्षेप-रूप को [illegible] से दूसरी [illegible] को लिख लेना चाहिये [illegible]
[illegible]
[illegible]

असत्य भाषण का दुष्परिणाम

एक लड़का भेड़ चराया करता था। उसका स्वभाव था कि वह कभी-कभी खेल खेल में ही भेड़िया! भेड़िया!! भेड़िया!!! चिल्ला उठता था। सैकड़ों बार उसने ऐसे ही चिल्ला चिल्ला कर आदमियों को चक्कर में डाला; क्योंकि जैसे ही वह चिल्लाता था मनुष्य अपना अपना काम छोड़ कर सहायता देने को दौड़ आते थे। परन्तु अब उनको यह पता लग गया कि वह हँसी में झूठ-मूठ चिल्ला उठता है तो आना बन्द कर दिया। एक समय एक भेड़िया आ ही गया, बस लड़का बड़े ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया, परन्तु कोई भी पहली तरह झूँठ समझ कर नहीं हिला चिगा। अन्त में यह हुआ कि भेड़िये ने लड़के को मार दिया और कई भेड़ों को भी मारकर खागया। सच है—'झूँठे का कोई विश्वास नहीं करता।'

संकेत-वाक्य

(१) लड़के की क्या आदत थी—झूठ-मूठ भेड़िया भेड़िया चिल्लाता था।
(२) इससे क्या होता था— लोग व्यर्थ परेशान होते थे।
(३) अन्त में क्या हुआ—लोगों ने उसकी बात पर विश्वास करना छोड़ दिया।
(४) कहानी का सार क्या है— झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।

स्वतन्त्र भाषा में कहानी लिखना

भेड़ चराने वाला एक लड़का जंगल में चिल्ला उठता था, 'भेड़िया आया! भेड़िया आया!!' उस लड़के की चिल्लाहट सुनकर लोगों को दया आ जाती थी और उसे बचाने के लिये दौड़कर उसके पास पहुँचते थे। तब वह उनसे कहता-मैंने तो दिल्लगी की थी, यहाँ कोई भेड़िया नहीं आया। लोग उसकी बुद्धि पर तरस खाकर वापिस आते थे। उसके ऊपर से सब का विश्वास उठ गया। एक दिन सचमुच भेड़िया आ ही गया। वह व्याकुल

होकर बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगा—"बचाओ! बचाओ!! भेड़िया आ गया।" आख़िरकार "काठ की हाँडी दो बार नहीं चढ़ती" कोई उसकी रक्षा के लिये नहीं आया। भेड़िये ने उसको मार डाला और कई भेड़ों को चीड़ फाड़ कर चट कर गया। भला कोई झूठे का भी विश्वास करता है।

अभ्यास

१—नित्य अपनी पुस्तक के गद्य-पाठ को संकेत-वाक्यों में लिख कर अपनी भाषा में दुबारा लिखो और अध्यापक को दिखाओ।

२—पद्य पाठों का भाव, संकेत-वाक्यों में लिख कर गद्य में उसका सरलार्थ लिखो।

कहानी-लेखन

कोई परिणाम व विषय का सार देकर छोटी छोटी कहानियाँ लिखने का अभ्यास करना चहिये। ऐसी कहानियों की भाषा बड़ी सरल होनी चाहिये। कहानियाँ लिखने से कल्पना शक्ति जागृत होती है।

हाथी ने बदला लेने की युक्तिः—

एक हाथी रोज़ तालाब में पानी पीने जाता था। रास्ते में एक दर्ज़ी की दुकान थी। दर्ज़ी हाथी को रोटी दिखाता तो हाथी खिड़की में सूँड़ डाल कर उसे खा लेता था। एक दिन रोटी के बदले उसने सूँड़ में सुई चुभो दी। हाथी उधर से सूँड़ में कीचड़ भर लाया और चुपचाप खिड़की में सूँड़ डाल कर उसके कपड़े बिगाड़ दिये।

लालची मारा जाता हैः—

एक कुत्ता मुँह में रोटी लिये हुये नदी में तैरता जाता था अपनी परछाईं देख कर समझा कि दूसरा कुत्ता भी रोटी लिये हुए जा रहा है। जैसे ही उसकी रोटी छीनने के लिये उसने मुँह खोला तो गाँठ का टुकड़ा भी चला गया। सच है-लालच में आदमी मारा जाता है।

सप्तम अध्याय

निबन्ध रचना का अभ्यास

विषय की अभिज्ञता

विविध विषयों की निबन्ध-रचना के लिये विविध विषयों की अभिज्ञता आवश्यक है। विषय की कुछ जानकारी बिना, रचना का कैसा ही अभ्यासी हो, लेख नहीं लिख सकता। यह छोटी पुस्तक संसार भर की बातें न बता कर, रचना का आदर्श और विषय-अभिज्ञता का मार्ग दिखा सकती है। विषय-अभिज्ञता के लिये पुस्तकाध्ययन, सत्संग, देशाटन, व्यवहार-कुशलता और अनुभव-शक्ति, निरीक्षण-शक्ति, विचार शक्ति, कल्पना-शक्ति, विवेचन-शक्ति का ठीक ठीक उपयोग आदि अनेक व्यापार हैं। देखो-भालो, सुनो-समझो, पढ़ो-लिखो, सोचो-विचारो; अनेक विषयों की अभिज्ञता प्राप्त होती जायगी। जाने हुए विषय को या विषय को जानकर निबन्ध-रचना की रीति के अनुसार रचना का अभ्यास करो।

प्रबन्ध भेद

यों तो विषय-भेद से प्रत्येक निबन्ध एक दूसरे से पृथक् ही होता है परन्तु सामान्यतः वर्णनात्मक, कथनात्मक, व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक चार प्रकार के मोटे भेद हैं।

वर्णनात्मक

किसी वस्तु का साधारण [illegible] — जिसे हम आँखों से देखते हैं कानों से सुनते हैं [illegible] से जानते हैं जैसे — [illegible]

[illegible]

[illegible]

विस्तार

आरम्भ करने के पीछे सूची के प्रत्येक उपशीर्षक को लक्ष करके वाक्य-समूह या अनुच्छेद (पैराग्राफ़) की रचना होनी चाहिये। एक वाक्य-समूह के वाक्यों में पारस्परिक और आनुपूर्व सम्बन्ध होना चाहिये। एक वाक्य-समूह में वर्णित भावों के लघुत्व गुरुत्व के अनुसार अनुच्छेद छोटा और बड़ा होता है। भाव गुरुत्व के कारण कभी कभी एक भाव एक से अधिक अनुच्छेदों में लिखा जाता है। इसी प्रकार सूची के हर एक उपशीर्षक पर अनुच्छेद-रचना करो और जिस प्रकार एक अनुच्छेद के सब वाक्यों में पारस्परिक-आनुपूर्व-सम्बन्ध होता है, उसी भाँति एक विषय के सब अनुच्छेदों में पारस्परिक-आनुपूर्व-सम्बन्ध होना है। किसी भाव की पुष्टि में कोई कहावत, किसी कवि का वचन अथवा कोई उदाहरण लिखना उचित हो, लिख देना चाहिये; परन्तु उदाहरण संक्षिप्त हो और विषय से पूरा सम्बन्ध रखता हो।

समाप्ति

समाप्ति होने पर उसे यों ही एक दम मत छोड़ दो। संक्षेप में या तो अपने निबन्ध का सार कह दो: या कोई शिक्षा निकलती हो उसे दिखादो, या कोई उससे अच्छा-परिणाम निकलता हो, स्पष्ट कर दो और एक बार फिर पढ़ जाओ। जहाँ जहाँ पर विरामादि चिह्न छूट गये हों अथवा कोई व्याकरण और मुहाविरे की भूल हो गई हो, ठीक करलो।

शहद

प्रबन्ध की सूची :—

क्या है ? कैसे इकट्ठा होता है ? इसका [illegible] कहाँ मिलता है ? गुण और उपयोग

सूची का विकास :—

अ—फूलों का रस जिसे मधु-मक्खी इकट्ठा करती है 'शहद' कहलाता है। मक्खियाँ फूलों पर बैठ कर रस को चूस लेती हैं, फिर अपने छत्तों में जमा करती रहती हैं। जब बहुत सा शहद जमा हो जाता है, तो बहेलिया अथवा और कोई मनुष्य छत्ते को तोड़ कर उसमें से शहद निचोड़ लेता है।

ब—मक्खियाँ झाड़ी, पेड़ की खोखर, डाली तथा घरों में कहीं अपना छत्ता रख लेती हैं।

स—शहद लाल रंग का बहने वाला लसदार पदार्थ है। ठण्ड से जम जाता है। स्वाद मीठा होता है।

द—लोग दूध या पानी में डाल कर पीते हैं। औषधि के साथ खाया जाता है।

चाँदी

प्रबन्ध का सार :—

१ प्रकार—खनिज पदार्थ।
२ विस्तार—सफ़ेद चमकीली धातु है।
३ गुण—खिंचने वाली, कूटने वाली, भारी, नरम, गलने वाली चमकदार है।
४ उपयोग—सिक्के और बर्तन बनाने तथा इसकी भस्म को वैद्य दवा के काम में लाते हैं। इसके वर्क भी दवाई के काम आते हैं।

प्रबन्ध का विस्तार :—

चाँदी एक प्रकार की धातु है जो मिट्टी तथा दूसरी धातुओं के साथ मिली हुई खान से निकाली जाती है। यन्त्रों द्वारा इसे शुद्ध करते हैं।

कच्ची चाँदी का रंग मटमैला होता है, यन्त्रों और अग्नि के प्रयोग से शुद्ध कर लेते हैं तो इसका रंग बहुत स्वच्छ, सफ़ेद और चमकीला निकल आता है।

पहिले कारीगर शुद्ध चाँदी की सलाई बना लेते हैं, फिर मज़बूत धातु के छेदों में डाल कर उसका तार खींचते हैं। पहले बड़े छिद्र में, फिर छोटे छिद्र में, फिर उससे भी छोटे छिद्रमें डाल कर खींचने से बहुत ही पतला तार बन जाता है।

कूटने से चाँदी टूटती नहीं है वरन् फैलती जाती है। यहाँ तक कि कूटते कूटते बहुत ही हलके वर्क़ बन जाते हैं। पानी की अपेक्षा यह धातु बहुत भारी होती है तभी पानी में छोड़ते ही डूब जाती है। इसकी बहुत मोटी सलाई को हाथ से नवा लेते हैं, किन्तु लोहे का कड़ा हाथ से नहीं नवता।

ताँबे को मिलाकर के एक लम्बी सलाख बनाते हैं, उससे छोटे छोटे टुकड़े काट कर यन्त्र की सहायता से सिक्के बनाते हैं। वैद्य लोग अन्य औषधियों के सहारे से इसकी भस्म बना कर दवाई के काम में लाते हैं। चाँदी के गहने और बर्तन बनाये जाते हैं। इसी प्रकार ताँबा, सोना, पारा आदि धातुओं पर लेख लिखो।

ताजमहल

सार :—

क्या है? कहाँ है? विस्तार, बनावट, उसका सौंदर्य।

विस्तार :—

युक्तप्रदेश का आगरा एक प्रसिद्ध नगर है। यह यमुना नदी के दाएँ किनारे पर बसा हुआ है। आगरा-फ़ोर्ट-स्टेशन से दो मील पूर्व एक भव्य इमारत बनी हुई है, लोग इसे ताजमहल कहते हैं।

यमुना जी के किनारे एक मील लम्बे घेरे में यह स्थान बना हुआ है। बाहर लाल पत्थर का कोट है। आगरा-फ़ोर्ट से ... नल पार्क में होकर जाते हैं, तो एक विशाल दरवाज़ा

घुटे बने हैं जो अनेक रंग के कीमती पत्थरों के बनाये गये हैं। इमारत के बाहरी और संगमरमर पर काले पत्थर के टुकड़[illegible] जड़े हुए हैं, उन पर जब चन्द्रमा का प्रकाश पड़ता है तो तारों की भाँति चमकने लगते हैं। इसके ठीक नीचे ही यमुना बहती हुई दिखाई देती है। इसे शाहजहाँ ने अपने जीवन-काल में ही अपनी स्त्री मुमताजमहल के लिये बनवाया था मरने के पीछे शाहजहाँ की समाधि भी यहीं बनवाई गई।

पक्षी विशेष के लिये

(१) नस्ल। (२) कहाँ पाया जाता है? (३) रंग। (४) स्वभाव। (५) भोजन। (६) लाभ। (७) आयु। (८) विशेष विवरण।

किसी देश के निवासियों पर

(१) नस्ल। (२) आकार और गठन। (३) भोजन। (४) रीति-रिवाज और धर्म। (५) सामाजिक-स्थिति और शिक्षा। (६) जीवन निर्वाह का ढंग। (७) उनकी सभ्यता पर विदेशी सभ्यता का प्रभाव। (८) विशेष विवरण।

मथुरा का विश्राम घाट

(१) बनावट। (२) यात्रियों का स्नान। (३) सायंकाल की आरती। (४) उस समय यमुना का दृश्य।

किसी स्थान विशेष पर यह शीर्षक होंगे।

१—उस स्थान का नाम और स्थिति, ऐतिहासिक वर्णन।
२—जलवायु और आस पास की पैदावार।
३—आकार, विस्तार, बड़ी सड़कें और जन-संख्या
प्रबन्ध, शासन और न्याय।
—शिक्षा का प्रबन्ध।
—व्यापार और शिल्प।
—ऐतिहासिक व सामाजिक दर्शनीय वस्तुएं

पुलिस के अधिकार में है। न्याय के लिये दीवानी, फ़ौजदारी और अर्जी की अदालतें हैं।

५—जगह जगह पर प्रारम्भिक शिक्षा के लिये पाठशालाएँ बनी हुई हैं। अनेक हाई-स्कूल, कालेज तथा छात्रनिवास बने हुए हैं, जिनमें बाहर के विद्यार्थी भी आकर शिक्षा पाते और रहते हैं। आगरा-कालेज युक्तप्रदेश का सब से पहिला कालेज है। इसके अतिरिक्त सेण्टजॉन, सेण्टपीटर्स और ट्रेनिंग कालेज भी हैं। आगरे में यूनीवर्सिटी भी खुल गई है।

६—आगरे में "जी. आई. पी" "ई. आई. आर" "बी. बी. एण्ड. सी. आई. आर" और "आर एन. आर" रेलवे द्वारा चारों ओर से माल आता है और जाता है। इससे पहिले यमुना के द्वारा नावों पर व्यापार होता था। लाल पत्थर व संगमरमर की बनी चीज़ें बहुत दूर तक जाती हैं। दरी और गलीचे बहुत अच्छे बनते हैं।

७—बादशाही समय की इमारतों में ताजबीबी का रौज़ा, अकबर बादशाह की कबर, एतमादुद्दौला व जुम्मामसजिद तथा आगरे से १२ कोस पश्चिम फ़तहपुर सीकरी के महल देखने योग्य हैं।

८—मेकडानलपार्क में महारानी विक्टोरिया का स्मारक देखने योग्य है। यहाँ का अस्पताल बहुत बड़ा है पागलखाना और अकबर का बनाया हुआ आगरे का क़िला देखने योग्य है।

नोट—यह साधारण विवरण है इसे विस्तृत और आव-श्यक भाग में लिख सकते हैं।

अभ्यास

१ [illegible]

२ [illegible]

घोड़ा

१—घोड़ा बिना सींग का चार पैर वाला जीव है, जो मा के स्तनों से दूध पीता है। यह देखने में बड़ा सुन्दर होता है। इसका शरीर दृढ़ और गठीला होता है। शरीर पर छोटे छोटे चमकीले बाल होते हैं। बड़ा घोड़ा, सुम के नीचे से लेकर अयालों तक प्रायः ५ फीट ऊँचा, और कानों के बीच से लेकर पूँछ की जड़ तक ७ फीट लम्बा होता है। छोटे घोड़े को टट्टू कहते हैं।

घोड़े के कान तेज़ और आँखें बड़ी तथा दृष्टि प्रबल होती है नथुने खुले हुए निरे मांस के बने होते हैं, इनमें हड्डी नाम को भी नहीं होती। सूँघने की शक्ति बड़ी प्रबल और टाँगें दृढ़ होती हैं, और खुर चिरे हुए नहीं होते।

२—घोड़ा बड़ा मिलनसार होता है। जंगल के घोड़े टोल बाँध कर रहते हैं। पालतू दशा में और जानवरों से स्नेह कर लेते हैं। इनकी स्मरण-शक्ति बड़ी प्रबल होती है अपने रक्षक और स्थान को कभी नहीं भूलते। यह बड़े स्वामिभक्त और बुद्धिमान होते हैं, इसके बहुत प्रमाण उपस्थित हैं। महाराना प्रताप के चेतक घोड़े ने अपने स्वामी को बचाने के लिये अपने प्राण तक दे दिये थे।

यह केवल घास जौ चने आदि का भूसा तथा चना, जौ और मोठ आदि का दाना खाता है। इसके होंठ इतने लचकदार होते हैं कि छोटी से छोटी घास को भी उनसे पकड़ कर कतर लेता है

३—अधिक घोड़ा सवारी के काम में आता है गाड़ी और इक्कों में जोता जाता है कहीं कहीं घोड़ों से हल भी चलाये जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् इसका प्रत्येक भाग काम में आता है। बालों का गद्दी तकिया में भरते हैं और उनसे

दुग्ध भी बनाये जाते हैं। खाल से जूतों के तले और घोड़ों का सामान तथा रगों और पुट्ठों से सरेस बनाते हैं हड्डियों से चाकुओं के बेंटे, खुरों से बटन और डिबिया आदि बनाते हैं।

अभ्यास

१—घोड़े पर एक स्वतन्त्र निबन्ध लिखो।

२—गाय, भैंस, बकरी, भेड़, गधा, खचर, बैल, हाथी ऊँट पर एक एक निबन्ध लिखो।

वृक्ष

यदि किसी वृक्ष पर निबन्ध लिखना हो तो :—

१—उसकी ऊँचाई और फैलाव।

२—कहाँ पाया जाता है ?

३—उसकी जड़, पेड़ी, डाली, पत्ते, फूल और फल का वर्णन।

४—उपयोग और लाभ।

५—कितनी आयु होती है ?

६—यदि कोई विशेषता हो।

नीम का वृक्ष

१—नीम का पेड़ चालीस फीट के समीप ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बड़ी ही सघन और छाया बहुत ही शीतल होती हैं इसलिये गर्मी के दिनों में गाँव के मनुष्य नीम की छाया के नीचे बैठते और सोते हैं।

२—यह पेड़ उत्तरी भारत के मैदानों में बहुत पाया जाता है।

३—पेड़ी-१५ फीट तक लम्बी और १० फीट तक मोटी होती है ऊपर की डाल खुरदरी होती है पेड़ में से बड़े बड़े गुद्दे और गुद्दों में से बड़ी बड़ी टहनियाँ निकलती हैं

पत्ते—लम्बे और नोकदार होते हैं उनके किनारों पर दोनों ओर दाँते बने रहते हैं

फूल—छोटे छोटे स्वेत रंग के फूल बहुत ही सुगन्धित होते हैं। जिस समय नीम फूलता है, अपनी चारों दिशाओं को सुगन्ध से भर देता है।

फल—इसका फल, रूप और आकार में निबौली के बराबर होता है, जिसको निबौली कहते हैं।

४—इसकी छाया आरोग्य वर्द्धक होती है। श्वास के साथ मनुष्य के फेफड़ों से जो हानिप्रद वायु निकलती है, उसे खींचकर प्राणप्रद-वायु छोड़ता है रुधिर-विकारों को नष्ट करने की इसमें बड़ी शक्ति है। लोग इसका अर्क निकाल कर काम में लाते हैं। छाल को घिस कर फोड़े-फुन्सियों पर लगाते हैं। लकड़ियों को मकान के काम में लाते हैं और छोटी छोटी टहनियों की दाँतौन बनाते हैं।

अभ्यास

१—नीम के वृक्ष पर अपनी भाषा में एक निबन्ध लिखो।

२—पीपल, तुलसी, बरगद, आम, अमरूद, पपीता, खजूर, बाँस और केला पर एक एक निबन्ध लिखो।

नोट—वर्णन-प्रबन्धों में हरएक वस्तु के विभाग करके इसी प्रकार लिख सकते हैं। वस्तु पाठों से इनमें बहुत सहायता मिल सकती है।

वर्णनात्मक-निबन्धों के कुछ ढाँचों को बढ़ा कर ऊपर दिखाया गया है। कुछ नमूने के निबन्ध दिये हैं, कुछ केवल ढाँचे। इसी प्रकार बहुत ढाँचे तैयार किये जा सकते हैं और उन पर रचना की जा सकती है।

दक्षिणी-भारत का एक पहाड़ी-दृश्य

भूमण्डल में सबसे अधिक सुन्दर प्राकृतिक दृश्य भारत के बर्फ़ से ढके हुए हिमालय पर्वत में है। हिमालय पर्वत की चोटी एवरेस्ट पृथ्वी की सब पर्वत-चोटियों से ऊँची है। भारत के दक्षिणी भाग में इतने ऊँचे पर्वत नहीं हैं, परन्तु तिस पर भी यहाँ प्राकृतिक शोभा की कमी नहीं है। यदि हम

हरिश्चन्द्र

१—जन्म और कुल।
२—स्वप्न।
३—राज्य-त्याग।
४—काशी-प्रवेश।
५—राजा रानी व पुत्र का बिकना।
६—विश्वामित्र की क्रूरता।
७—राजा का मरघट दास।
८—पुत्र की मृत्यु।
९—राजा का कफ़न माँगना।
१०—भगवान् का प्रकट होना।

उपसंहार

घटना और उपाख्यानों की सूची भी उनकी विशेषता के अनुसार तैयार होती है।

हरिश्चन्द्र के चरित्र की कोई मुख्य घटना; जैसेः—"काशी में रोहिताश्व की मृत्यु":—

१—पूजा के लिये फूल लेने जाना।
२—सर्प-दंश।
३—रानी का विलाप।
४—मरघट को प्रस्थान।
५—राजा की मानसिक अवस्था।
६—रानी से कफ़न माँगना।
७—रानी का आँचल फाड़ना।
८—भगवान का आकर हाथ पकड़ना।
९—फल।

सं० १९८१ का जल-विप्लव

१—उत्तरी-पश्चिमी भारत में अधिक वर्षा।
२—गंगा यमुनादि में बाढ़ आना।
३—रोहतक, कानपुर, दिल्ली, हरिद्वार, सहारनपुर, आगरा आदि की दुर्दशा
४—सेवा-समिति का कर्तव्य।
५—देशवासियों की सहायता।

विसूवियस ज्वालामुखी का फटना

१—उस देश की पूर्व समृद्धि।
२—धड़ाका।
३—दुर्दशा और हानि।
४—देशवासियों की सहायता।

काँगड़े का भूचाल

१—देश की पूर्व अवस्था।
२—[illegible]
[illegible]

४—देशवासियों का कर्तव्य ।
५—सरकारी सहायता ।

संवत् १९५२ का अकाल

१—कारण (अनावृष्टि) ।
२—प्रजा की अवस्था ।
३—धनी लोगों का कर्तव्य ।
४—सरकार की सहायता ।

ताजमहल

१—कब, क्यों किसने बनवाया ।
२—कारीगर और पत्थर कहाँ से आये ।
३—कितने दिन में किस भाँति बना ।
४—कितना व्यय हुआ ।
५—भारतीय इतिहास में इसकी स्थिति ।

दिल्ली में अशोक स्तम्भ

१—किसने, क्यों कब बनवाया ।
२—दिल्ली कैसे आया ।
३—इस पर खुदे हुए लेख ।
४ इतिहास में इसकी स्थिति ।

भगिनी निवेदिता

पूर्व कथन

भगिनी निवेदिता आयर्लैण्ड-निवासी एक पादरी की कन्या थीं । घर में इसका नाम 'मार्गरेट नोबुल' था ।

माता पिता के साधु व्यवहार से बालिका नोबुल के हृदय में परोपकार का भाव उदय होगया ।

एक दिन नोबुल के पिता के घर पर एक भारतीय अतिथि आ ठहरता । वह होनहार बालिका अतिथि के द्वारा भारत का वर्णन सुनकर, उसे देखने को उत्सुक हुई । साधु ने कहा कि "यह बालिका भारत की सेवा में अपना जीवन बितावेगी ।"

के लिये बहुत व्याख्यान दिये, जिनका इङ्गलैण्ड की जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। १६०६ और १६०८ में फिर इङ्गलैण्ड गये और लार्ड मार्ले से मिलकर बहुत सी हित की बातें कीं। अन्त में आप १६१३-१४ में पब्लिक-सर्विस कमीशन में भारत की ओर से सम्मिलित हुए। सन् १६१२ में दक्षिण अफ्रीका जाकर भारतवासियों के दुःख दूर करने का यत्न किया, और उसमें बहुत कुछ सफलता हुई।

भारत-सेवक-समिति

अपने उद्देश्यों की सफलता का प्रयत्न सदैव जारी रखने के लिये आपने 'भारत-सेवक-समिति' स्थापित की। समिति के उच्च-शिक्षा-प्राप्त अनेक आत्मत्यागी योग्य युवक सभासद् हैं, जो नाममात्र वेतन पर अपना निर्वाह करके देश का काम करते हैं। अकालों तथा हरिद्वार-कुम्भ के समय समिति की ओर से जो कार्य हुआ है, राजा और प्रजा दोनों उसका कीर्ति-गान करते हैं। अभी इस समिति को सहस्रों नहीं वरन् लाखों आत्मत्यागी युवकों की आवश्यकता दीख पड़ती है।

मृत्यु

इस प्रकार ४८ वर्ष की आयु तक महात्मा गोखले ने भारत वर्ष की भलाई के लिये प्राणपण से चेष्टा की। काम की अधिकता से इनका स्वास्थ्य भी बहुत दिनों से बिगड़ गया था, परन्तु उसकी कुछ परवाह नहीं की। १६ फ़रवरी सन् १६१५ ई० को दिन के एक १ बजे इनकी तबीयत बहुत बिगड़ गई। रात १० बजे राजा-प्रजा और समिति की बात करते करते आपने इस असार संसार को छोड़, स्वर्गधाम की यात्रा की। देश भर में हाहाकार मच गया। राजा और प्रजा दोनों ही के शोक का पारावार न रहा। भारत के प्रत्येक नगर और संस्था ने उनकी मृत्यु पर हार्दिक शोक तथा उनके कुटुम्ब के सा

के लिये बहुत व्याख्यान दिये, जिनका इङ्गलैण्ड की जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। १९०६ और १९०८ में फिर इङ्गलैण्ड गये और लार्ड मार्ले से मिलकर बहुत सी हित की बातें कीं। अन्त में आप १९१३-१४ में पब्लिक-सर्विस कमीशन में भारत की ओर से सम्मिलित हुए। सन् १९१२ में दक्षिण अफ्रीका जाकर भारतवासियों के दुःख दूर करने का यत्न किया. और उसमें बहुत कुछ सफलता हुई।

भारत-सेवक-समिति

अपने उद्देश्यों की सफलता का प्रयत्न सदैव जारी रखने के लिये आपने 'भारत-सेवक-समिति' स्थापित की। समिति के उच्च-शिक्षा-प्राप्त अनेक आत्मत्यागी योग्य युवक सभासद् हैं, जो नाममात्र वेतन पर अपना निर्वाह करके देश का काम करते हैं। अकालों तथा हरिद्वार-कुम्भ के समय समिति की ओर से जो कार्य हुआ है, राजा और प्रजा दोनों उसका कीर्ति-गान करते हैं। अभी इस समिति को सहस्रों नहीं वरन् लाखों आत्मत्यागी युवकों की आवश्यकता दीख पड़ती है।

मृत्यु

इस प्रकार ४८ वर्ष की आयु तक महात्मा गोखले ने भारत वर्ष की भलाई के लिये प्राणपण से चेष्टा की। काम की अधिकता से इनका स्वास्थ्य भी बहुत दिनों से बिगड़ गया था, परन्तु उसकी कुछ परवाह नहीं की। १९ फरवरी सन् १९१५ ई० को दिन के एक १ बजे इनकी तबीयत बहुत बिगड़ गई। रात १० बजे राजा प्रजा और समिति की याद करते करते आपने इस असार संसार को छोड़ स्वर्गधाम की यात्रा की। देश भर में हाहाकार मच गया। राजा और प्रजा दोनों ही के शोक का पारावार न रहा। भारत के प्रत्येक नगर और संस्था ने उनकी मृत्यु पर हार्दिक शोक तथा उनके कुटुम्ब के साथ समवेदना प्रकट की।

आपके उत्तराधिकारी

मृत्यु के समय आपकी दो अविवाहिता कन्याएँ थीं, जो उस समय १६ व ११ वर्ष की आयु में मैट्रिक और बी० ए० की परीक्षा में सम्मिलित हुईं। बालिकाओं की सहायता के लिये लोगों ने लिखा पढ़ी की परन्तु आत्मत्याग की मूर्ति इन देवियों ने धन्यवाद-पूर्वक उसे अस्वीकार किया।

फल

जन्म लेना ऐसे ही पुरुषों का सार्थक है, अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।

अभ्यास

१—भगिनी निवेदिता और महात्मा गोखले के चरित्रों पर एक एक स्वतन्त्र निबन्ध लिखो।

२—इनके जीवन से तुम्हें जो शिक्षाएँ मिलती हैं उनकी विस्तृत व्याख्या करो।

३—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द पर एक एक निबन्ध लिखो।

दिल्ली में अशोक-स्तंभ

दिल्ली भारतवर्ष का बहुत पुराना नगर है। उसके पुराने खँडहर और ध्वंसावशेष* अनेक गम्भीर परिवर्तनों की याद दिलाते हैं। उसके एक एक खँडहर की एक एक ईंट इतिहास प्रेमियों को—ऐतिहासिक खोज करने वालों को—बड़े महत्व की चीज है। आज हम यहाँ के एक २२०० वर्ष पहले बने हुए स्तंभ का उल्लेख करते हैं। यह स्तम्भ ईसा से कई शताब्दी पहले महाराज अशोक ने बनवाया था। दिल्ली के पास फीरोजाबाद के कोटला दुर्ग में स्थापित है। महाराज

*पुराने मकानों के चिह्न

है। यदि किसी कारण से उसे दुःख होता है तो उसके मित्र सहानुभूति दिखाते हैं और धैर्य्य दिलाते हैं, जिस से उसे अधिक सुख मालूम होता है। जिस मनुष्य का मित्र नहीं है, उसे सुख के समय में पूरा आनन्द नहीं आता और दुःख के समय दुःख दूना मालूम होता है। मित्रहीन मनुष्य को धन, वैभव और मान से कोई लाभ नहीं होता; क्योंकि इनका उपभोग मनुष्य अच्छी तरह से तब ही कर सकता है जब उसके मित्र हों। यदि मनुष्य अपनी संपत्ति द्वारा मित्रों का भी कुछ भला करता है तो उसे विशेष आनन्द होता है।

जब हम कोई नया काम हाथ में लेते हैं, तब हमें मित्रों की आवश्यकता होती है। मित्र हीन मनुष्य बिना सलाह के नये काम में हाथ लगाने से हिचकता है; परन्तु मित्रवाला मनुष्य अपने मित्र द्वारा उत्साहित होकर साहस से नये काम में हाथ लगाता है और उसे उसमें सफलता भी मिलती है। प्रत्येक मनुष्य अपने काम के विषय में यह भी जानना चाहता है कि वह जन समुदाय का अच्छा मालूम होगा या बुरा। यह बात वह मित्रों द्वारा ही जान सकता है, क्योंकि चाप लूस झूठी तारीफ़ कर देते हैं और अवसर निकलने पर बड़ी निन्दा करने लगते हैं। मित्रों की सच्ची आलोचना से मनुष्य को अपनी भलाई और बुराई मालूम हो जाती है और वह अपने दुर्गुणों को दूर करने के प्रयत्न में लग जाता है।

मित्रों से सबसे अधिक लाभ आपत्ति के समय में होता है। जब मनुष्य को बहुत सी आपत्तियाँ आकर घेर लेती हैं और वह हताश हो जाता है तो आपत्ति से बचाने वाले व ढाढ़स बंधाने वाले मित्र ही हुआ करते हैं। सच्चे मित्र अपने मित्रों को बड़ी कठिनाइयों से बचा लेते हैं। मित्रहीन मनुष्य को विपत्ति के समय कोई सहारा नहीं रहता है।